Sir, I don't think that I would be able to cover all the points. Now, since you are hinting, I am concluding my speech.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): You can conclude. Otherwise, you can conclude it next time.

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: Sir, there is no point in doing that. There is no point in doing that after fifteen days' time. There is no point. I have made all the points which I wanted to make. I don't have to say anything more than this.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Now, Shri Gnanadesikan. Now, Mr. Gnanadesikan, what I would suggest to you is that if you what to speak, then we can continue with this Resolution next time.

SHRI B. GNANADESIKAN: Sir, only two minutes, please.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Then, you can speak next time.

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: Sir, I will make a formal request to him to withdraw it. All the points which he has made are relevant. They are under our consideration. We have already taken decisions on those things ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): That's enough. So, Mr. Gnanadesikan, are you withdrawing the Resolution?

SHRI B.S. GNANADESIKAN: Yes; Sir, I am withdrawing.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Ok, Does he have the permission of the House to withdraw the Resolution?

The Resolution was by leave withdrawn.

[MR. CHAIRMAN in the Chair]

FELICITATIONS TO THE RETIRING MEMBERS

MR. CHAIRMAN: Hon. Members todays we bid farewell to some of our colleagues who are retiring this year on completion of their term of office. In the constitutional scheme of thiflgs, as you know, one-third of our Members retire every second year. This ensures continuity along with change in the composition of the House. Out of the 73 Members retiring this year, 57 Members will be completing their term of office in the months of April and May.

Some of the retiring Members, I am sure, would be re-elected. Those who will not come back will certainly be missed by the House. The membership of the Rajya Sabha is in itself a great honour. Many of the retiring Members are public figures of standing, are well-versed in debating skills and in the art of criticising political opponents without offending them. Dignified debate is essential to democracy and is the finest form of communication. I place on record my heartfeit appreciation of the valuable contribution that the retiring Members have made to the deliberations of the House and the service they have rendered to parliamentary democracy. On a personal note, I am grateful for the consideration they have shown towards me in conducting the business of the House. I am sure that the Members who are retiring would cherish the memory of their association with this august House. I wish them good health, happiness, success and long years of service to the nation.

Now, the hon. Leader of the Opposition.

नेता विरोधी दल (श्री जसवन्त सिंह): जनाब सदर साहब, वैसे भी जब हमारे मैम्बरान राज्य सभा से, यहां से रिटायर होकर जाते हैं, तो स्वाभाविक है कि मन कुछ खट्टा होता है। आज हमारे जो मैम्बरान जा रहे हैं, रिटायर हो रहे हैं, उनके

साथ कुछ-खट्टा-सा व्यवहार भी हुआ है। उससे और भी हमारे दिल को चोट पहुंची है। अब यह जो व्यवस्था है राज्य सभा की कि हर दो साल में इसमें एक प्रकार की पुनरावृत्ति होती है, नया खून आता है और कुछ जाते है। जाने का अर्थ यह नहीं है कि वे सदैव के लिए विदा हो रहे हैं। वे अपने-अपने उनके राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि के रूप में यहां आएं और इसी तौर पर आगे देश का उनके दल का बहुत कुछ काम वे करेंगे।

मैं सूची देखता हूं, जो मैम्बरान हमारे आने वाले सत्र में फिर से जब हाउस बैठेगा, नहीं होंगे, तो हमारे मित्र और बहुत ही कुशल मंत्री, जिन्होंने बहुत ही चतुराई से और कुशलता से विभाग, जो अपने आपमें एक दुखदायी विभाग है, पार्लियामेंटरी अफेयर्स का, सुषमा जी हंस रही है, क्योंकि वह इस गली में से गुजरी हुई हैं, तो सुरेश जी, आपका जाना हमको खलेगा। अब मैं अगर कहूं कि वाकई हम चाहते हैं कि आप अपने राजनीतिक जीवन में और भी सफलता प्राप्त करें, तो इसका अर्थ मेरे मध्य प्रदेश के दोस्त यह न ले लें ...

प्रो॰ राम देव भंडारी (बिहार): सर, आपने तो आर्शीवाद दे दिया।

श्री जसवन्त सिंह: मेरी शुभकामनाएं सदैव रहेंगी। कई वर्षों से मैंने देखा है कि किस लगन से उन्होंने पार्टी में काम किया है। मेरी अपेक्षा है कि उसी लगन से अपनी पार्टी और देश की सेवा करते रहेंगे।

श्री पेरूमल भी जा रहे हैं। द्विजेन्द्र नाथ जी अवश्य वापस आएंगे, नहीं आएंगे, तो पार्टी के अन्य काम में लगेंगे, ऐसा उनका पद ही अपने आप में घोषित करता है आपको भी मेरी शुभकामनाएं हैं। Dr. Alexander will sorely missed. He brought to the House a new kind of a sense of propriety and reality, as also the accumulated wisdom of many years of civil service in many posts. That was a very valuable addition to the House. All his interventions, invariably, whether I was able to be here when he intervened or listen to them from the facilities very kindly provided by the House, were very worthy and eminent and you added value to our House, Sir. We shall sorely miss you. एकनाथ जी हमारे साथ कई वर्षों से रहे। आपको हमारी शुभकामनाएं हैं। आपने बहुत ही लगन से काम किया है।

सईद खान साहब भी हैं, लेकिन शायद अभी वह यहां नहीं हैं। To him also, Sir, we wish very well. In your future political and personal life, you have best of our good wishes. इसके बाद कल से ही होली का पर्व है ...(व्यवधान)... हां, राम देव जी महाराज, आपको तो मैं भूल ही गया। आप मुझे क्षमा करें ...(व्यवधान)...

प्रो॰ राम देव भंडारी: आप हमें कैसे भूल गए, सर, आप तो हमको भूलते नहीं हैं।

श्री जसवन्त सिंह: साहब, हमसे यह तो बड़ी भूल हुई ...(व्यवधान)... Chandra Sekar Reddy ji, you are also going! But you are not there in the list. ...*(Interruptions)*... चन्द्रशेखर रेड्डी जी और राम देव जी, आपका नाम मैं कैसे भूल गया, क्षमा करना, लेकिन यह सूची में नहीं था। One of the most pleasant and smiling leaders of the parliamentary parties that we have had, both of you. I have always admired the equanimity and also the strong sense of assertion. जिस भावना से आपकी पार्टी की बात आपने रखी, my good wishes are with both of you अगर मेरे लायक कभी भी कोई काम-काज हो, whatever I can do तो फ़रमाना। But I have no doubt in my mind that you will have a very valuable role to play in your respective States in the polity and political parties of those States.

सर, कल से रंग का त्यौहार है। रंग खेलने के साथ-साथ अपने आप में एक ऋतु जाती है और दूसरी आती है। 6 या 7 तारीख को संवत्सरी है ...(व्यवधान)...

श्रीमती सुषमा स्वराज (उत्तर प्रदेश): 13 अप्रैल को है।

श्री जसवन्त सिंह: उसमें चैत्र नवरात्र भी शुरू होंगे, जिसे महाराष्ट्र, पंजाब इत्यादि में गुडीपर्व कहते हैं। यह समूचे देश में किसी न किसी रूप में परिवर्तन के परिचायक हैं। इसलिए यह अच्छा ही है कि राज्य सभा का जो परिवर्तन इस बार हो रहा है, यह समय और ऋतु के परिवर्तन के साथ मेल खा रहा है। इसलिए यह शोक का विषय नहीं, कल से तो रंग

फाग है। हमारे राजस्थान में अपने आप में यह फाग मनाई जाती है, अन्य कई जगह भी मनाई जाती है। मेरी प्रार्थना है मज़े से आप फाग खेलें और जल्दी ही इसी सदन में आप वापस आएं। इसी शुभकामना के साथ बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री के॰ रहमान खान (कर्णाटक): मोहतरम सदर साहब, आज इस ऑगस्ट हाउस से हमारे जो मुअज़्ज़िज़ मेम्बरान अपनी मुद्दत पूरी करके हमारे दरमियान से रुखसत हो रहे हैं, मैं दिल की गहराइयों से उनको नेक ख़्वाहिशात पेश करता हूं। बिला शुबह यह हम सबके लिए एक जज़्बाती लम्हा है। इस मौके पर अपने जज़्बात का इज़हार मेरे लिए बहुत मुश्किल, है, क्योंकि आज हम अपने इन अज़ीज मैम्बरान को राज्य सभा के ऐवान से रुख़सत कर रहे हैं, जिनके साथ हमारा बहुत ही खूबसूरत और यादगार वक़्त गुजरा। इस मौके पर एक तरफ आप हज़रात को दरमियान से रुख़सत करते हुए अफ़सोस हो रहा है, तो दूसरी तरफ इस बात से इत्मिनान है कि आप अपनी मुद्दत का ज़माना निहायत नेकनामी, कामयॉबी के साथ गुजार कर नई मंजिलों की तरफ जा रहे हैं। इस वक़्त ग़म और ख़ुशी का मिला-जुला माहौल जो कैफ़ियत पैदा कर रहा है, आप सब इसका अहसास जानते हैं।

यूं तो आप तमाम मैम्बरान ही मेरे लिए अज़ीज और मोहतरम हैं, मैं खास तौर पर मेरे भाई, जनाब सुरेश पचौरी साहब के लिए कहता हूं, जिन्होंने 24 साल का जमाना इस हाउस में गुज़ारा। उनके साथ गुज़रा हुआ वक़्त हमें हमेशा याद रहेगा और उनकी आवाज हमारे कानों में गूंजती रहेगी। हमारी दुआ है कि अल्लाह उनको और भी आला औहदा अता करें। इसके अलावा हमारे बुजुर्ग साथी प्रो॰ राम देव भंडारी जी, जो हमारे साथ 16 सालों से इस हाउस के मैम्बर रहे, उनकी यादें और उनका डिबेट्स में इंटरवेंशन कभी हम फरामोश नहीं कर पाएंगे। मेरी ही रियासत कर्णाटक से हमारे मुअज्जिज़ मैम्बर जनाब एम॰वी॰ राजशेखरन, जनार्दन पुजारी जी, मैडम करियप्पा जी और विजय माल्या जी की कमी मैं महसूस करूंगा। डॉ॰ अलेक्जेन्डर साहब हमारे बुजुर्ग शख्सियत हैं। उन्होंने इस हाउस की गरिमा बढ़ाई। आज वह भी रिटायर हो रहे हैं। उनकी कमी भी हम महसूस करेंगे। इसके साथ-साथ श्री मंगनी लाल मंडल, श्री शत्रुघ्न सिन्हा, श्री उदय प्रताप सिंह साहब की शायरी ...(**व्यवधान**)... हां, वह नवम्बर में जा रहे हैं ...(**व्यवधान**)... एकनाथ जी, अजय मारू जी और हमारे बहुत-से साथी आज हमसे जुदा हो रहे हैं। मैं तमाम नेक ख्वाहिशात के साथ उनको अलविदा कहता हूं।

हमारे दोस्तों ने फ्लोर पर होने वाली बहसों में अपनी इल्मी, सियासी और जम्हूरी सलाहियतों को बेबाक और बरमला इजहार किया है, अवामी मसाल को जिस तरह से उज़ागर किया है, मुल्क और कौम के लिए जो कोशिश की है, वह सब सुनहरे ओराक़ में माखूज़ हैं। इसके अलावा ऐवान की कार्रवाई चलाने में आप सब के तावुन की वजह से मैं जाती तौर पर आपका शुक्रगुजार हूँ। हालाँकि हाउस की कार्यवाही में गरमागरम बहस के दौरान अक्सर ऐसे मौके भी आए हैं, जब हमने सख्त लहजे इस्तेमाल किये हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि आपसे कुछ differences हैं। मुझे यकीन है कि अगर मैंने सख्त लहजे में आपसे कुछ कहा है, तो आप उसे भूलेंगे। मुझे यकीन है कि रिटायर होने वाले मैम्बरान इस ऐवान के साथ अपनी वाबस्तगी और आपसी दोस्ती का जज्बा अज़ीज रखेंगे, जिनके साथ हम सब ने मिल-जुल कर पार्लियामानी जम्हूरियत को मजबूत बनाने के लिए काम किया है। इस ऐवान से रुखसत होते वक्त मुल्क की तामीर और तरक्की के लिए अपने तावुन का जो अहद किया है, उसे याद रखेंगे। हालाँकि इस ऐवान से आपकी बिदाई आपकी सियासी जिन्दगी का आरजी दौर है, मुझे उम्मीद है कि रिटायर होने वाले अक्सर मैम्बरान एक बार फिर मुनतखब होकर आएँगे, अब नहीं आए तो आइंदा आएँगे। हॉ, यह जरूर है कि वे मैम्बरान जो हमारे साथ नहीं रहेंगे, हमें उनकी कमी महसूस होती रहेगी और जो मैम्बरान दोबारा मुन्तखब होकर आए हैं, वे नए जोश और जज्बे के साथ अवाम की खिदमत को अंजाम देते रहेंगे।

दोस्तो, मिलना और बिछड़ना फितरत का लाजिमी उसूल है, मगर आप हजरात से जहाँ बिछड़ने का गम है, वहाँ इस बात का यकीन है कि आप जहाँ भी रहेंगे अपनी सलाहियती रोशनी बिखेरते रहेंगे। आपके बारे में अगर यह कहा जाए तो गलत न होगा कि-

जहाँ भी जाएगा वह रोशनी लुटाएगा,

किसी चिराग़ का अपना मकान नहीं होता।

इस अलविदाई लम्हात के मौके पर मैं आप हजरात को नेक ख्वाहिशात पेश करता हूँ और दुआ करता हूँ कि—

फूलों की तरह हँस के गुजरती रहे हयात,

गम आपके करीब न आए, खुदा करे।

शुक्रिया।

†[شری کے۔ رحمان خان ''کرناٹک'': محترم صدر صاحب! آج اس آگسٹ ہاؤس سے ہمارے جو معزز ممبران اپنی مدّت پوری کر کے ہمارے درمیان سے رخصت ہو رہے ہیں میں دل کی گہرائیوں سے ان کو نیک خواہشات پیش کرتا ہوں ۔ بلاشبہ یہ ہم سب کے لئے ایک جذباتی لمحہ ہے۔ اس موقع پر اپنے جذبات کا اظہار میرے لئے بہت مشکل کام ہے کیونکہ آج ہم اپنے ان عزیز ممبران کو راجیہ سبھا کے ایوان سے رُخصت کرر ہے ہیں۔ جنکے ساتھ ہمارا بہت ہی خوبصورت اور یادگار وقت گزرا ہے۔

اس موقع پر آپ حضرات کو اپنے درمیان سے رُخصت کرتے ہوئے افسوس ہو رہا ہے تو دوسری طرف اس بات سے اطمینان ہے کہ آپ اپنی مدّت کا زمانہ نہایت نیک نامی اور کامیابی کے ساتھ گزار کر نئی منزلوں کی طرف جا رہے ہیں۔ اس وقت غم اور خوشی کا ملا جُلا ماحول، جو کیفیت پیدا کر رہا ہے آپ سب اسکا احساس جانتے ہیں۔

یوں تو آپ تمام ممبران ہی میرے لئے عزیز اور محترم ہیں مگر خاص طور پر ہمارے بھائی جناب سُریش پچوری صاحب کے لئے کہتا ہوں جنھوں نے ۲۴ سال کا زمانہ اس ہاؤس میں گزارا انکے ساتھ گزرا ہوا وقت ہمیشہ یادر ہے گا اور ان کی آواز ہمارے کانوں میں گونجتی رہے گی ہماری دعا ہے کہ اللہ ان کو اور بھی اعلیٰ عہدہ عطا کرے اسکے علاوہ ہمارے بزرگ ساتھی جناب پروفیسر رام دیو بھنڈاری جی، جو ہمارے ساتھ ۱۶ سالوں سے اس ہاؤس کے ممبر رہے ہیں اُنکی یادیں اور ان کا ڈبیٹس میں انٹروینشن کبھی ہم فراموش نہیں کر پائیں گے۔ میری ہی ریاست کرناٹک سے ہمارے معزز ممبر جناب ایم۔ وی۔ راج شیکھرن صاحب، جناب جنار دھن پجاری صاحب، میڈم کرپیا جی اور وِجے مالیہ صاحب کی کمی میں محسوس کروں گا۔ ڈاکٹر الیگزنڈر صاحب، ہمارے بزرگ شخصیت ہیں انھوں نے اس ہاؤس کی گرما بڑھائی۔ آج وہ بھی ریٹائر ہو رہے ہیں ان کی کمی بھی ہم محسوس کریں گے۔ اس کے ساتھ ساتھ شری منگنی لال منڈل، شری شترو گھن سنہا اور شری ادے پرتاپ سنگھ جی کی شاعری۔۔ مداخلت۔۔ ہاں وہ نومبر میں جارہے ہیں۔۔ مداخلت۔۔ ایکناتھ جی، اجے مارو جی اور ہمارے بہت سے ساتھی آج ہم سے جدا ہو رہے ہیں میں تمام نیک خواہشات کے ساتھ ان کو الوداع کرتا ہوں۔

† [Transliteration in Urdu Script].

ہمارے دوستوں نے فلور پر ہونے والی بحثوں میں اپنی علمی، سیاسی، اور جمہوری صلاحیتوں کا بے باک اور برملا اظہار کیا، عوامی مسائل کو جس طرح سے اُجاگر کیا، ملک وقوم کے لئے جو کوششیں کی ہیں وہ سب سُنہرے اوراق میں محفوظ ہیں۔ اسکے علاوہ ایوان کی کارروائی چلانے میں آپ سب کے تعاون کی وجہ سے میں ذاتی طور پر آپ کا شکر گزار ہوں۔ حالانکہ ہاؤس کی کارروائی میں گرما گرم بحث کے دوران اکثر ایسے موقع بھی آئے ہیں جب ہم نے سخت لہجے استعمال کئے ہیں۔لیکن اس کا مطلب یہ نہیں کہ آپ سے کچھ differences ہیں۔ مجھے یقین ہے کہ اگر میں نے سخت لہجے میں آپ سے کچھ کہا ہے تو آپ اسے بھلیں گے مجھے یقین ہے کہ ریٹائر ہونے والے ممبران اس ایوان کے ساتھ اپنی وابستگی اور آپسی دوستی کے جذبہ کو عزیز رکھیں گے جس کے ساتھ ہم سب نے مل جُل کر پارلیمانی جمہوریت کو مضبوط بنانے کے لئے کام کیا ہے۔ اس ایوان سے رخصت ہوتے وقت ملک کی تعمیر وترقی کیلئے اپنے تعاون کا جو عہد کیا ہے اُسے یاد رکھیں گے۔ حالانکہ اس ایوان سے آپ کی وداعی آپ کی سیاسی زندگی کا عارضی دور ہے ۔ مجھے امید ہے کہ ریٹائر ہونے والے اکثر ممبران ایک بار پھر منتخب ہو کر آئیں گے، اب نہیں آئے تو آئندہ آئیں گے۔ ہاں یہ ضرور ہے کہ وہ ممبران جو ہمارے ساتھ نہیں رہیں گے، ہمیں انکی کمی محسوس ہوتی رہے گی اور جو ممبران دوبارہ منتخب ہو کر یہاں آئیں گے وہ نئے جوش اور جذبہ کے ساتھ عوام کی خدمت انجام دیتے رہیں گے۔

دوستو ! ملنا اور بچھڑنا فطرت کا لازمی اُصول ہے مگر آپ حضرات سے جہاں بچھڑنے کا غم ہے وہاں اس بات کا یقین ہے کہ آپ جہاں بھی رہیں گے اپنی صلاحیتوں کی روشنی بکھیرتے رہیں گے ۔آپ کے بارے میں اگر یہ کہا جائے تو غلط نہ ہوگا کہ ؎

جہاں بھی جائے وہ روشنی لٹائے گا　　کسی چراغ کا اپنا مکاں نہیں ہوتا

اس الوداعی لمحات کے موقع پر میں آپ حضرات کو نیک خواہشات پیش کرتا ہوں اور دعا کرتا ہوں کہ ؎

پھولوں کی طرح ہنس کر گزرتی رہے حیات　　غم آپ کے قریب نہ آئے خدا کرے

"ختم شد"

SHRI SITARAM YECHURY (West Bengal): Sir, this is indeed a very emotional moment. It is always very sad to say goodbye to your colleagues with whom you have worked. For me, this is my first farewell speech that I am making in this august House. So, I am one of the most junior ones. Many of those, who are retiring, have been very senior to me in this House. They have contributed a lot and, personally, I am indebted to many of them for having shown me the way in this House, when I was a newcomer, how to proceed ahead. And, I feel, all of us will be missing my brother, Shri Suresh Pachouri, who has been ably handling the delicate situation of how to keep the outside support inside and had been playing rather tedious role; Mr. Poojary, who was with me in our Standing Committee meetings; Madam Cariappa with whom I represented the Indian Parliament in one of our international meetings at the UNESCO.

Mr. Ved Prakash Goyal and Mr. Shatrughan Sinha — unfortunately both of them are not here — both of them held the same portfolios and served in the same Standing Committee and were of great help and assistance in the functioning of that. They all will be missed here, particularly, my dear friend, Prof. Ram Deo Bhandary ji, with whom, I remember, many-many years ago, as a junior I used to accompany him in the helicopters in the campaign in Bihar and also when he was Leader of his Party in this House.

Sir, Ravula Chandra Sekar Reddy and I come from the same State, and, he has been senior here. Sir, it is indeed very difficult to say goodbye to all such people. It is always with a fond hope that this is not saying goodbye to politics but to the membership of this House, as we are sure, they all will either come back here or interact with us in some way or the other.

But Dr. P.C. Alexander told me that he has decided to call it quits; we will miss him surely. I, though much junior to him, told him, Sir, this is a great virtue if you are able to know when to leave and when not to come back again. I think, he has displayed this wisdom and is saying that he is not coming back.

Sir, on behalf of the CPI (M), I would like to thank all of them for the cooperation that they have extended to us. There have been occasions, there will be occasions when from the political point of view, we may differ, we may contest each other, but, I think, that is the essence of democracy and that is the spirit of democracy that let the hundred flowers bloom, let a thousand thoughts contend, and, that is when we will have the best that this system can provide. So, I wish them success in their future with the fond hope that they will come back again to this House again, and, maybe, give a farewell speech when I retire. By that time, some of them will be here. With this, personally as well as on behalf of my party, I extend my best wishes for the future of all of them. Thank you.

DR. V. MAITREYAN (Tamil Nadu): It is a moment of gratitude and sorrow. It is an occasion for gratitude because we remember the immense contribution made by the Members in enriching and elevating the quality of debate in this House. We remember them for the role that they play in diffusing the situation when the House witnesses turbulent situation. We remember them for adding wit and life in the functioning of the House. It is a moment of

sorrow because we will be missing them, especially, Suresh Pachouriji, with whom I had a very personal acquaintance and relationship, Prof. Ram Deo Bhandaryji, Shri Ravula Chandra Sekar Reddy, who is my left hand and Dr. P.C. Alexander and others. I particularly remember, Dr. Alexander wrote a wonderful article just before the Session started. When I met him here in the corridors, I appreciated his article and I assured him that we will do exactly the opposite in the House. On this occasion, today, I assure you, Sir, we will definitely get the sense of your article and we will try to be good boys in the House.

It is good to see quite a number of retiring Members to be back again in this House. As many as 17 members are returning back to this House. For Members of my Party and others from the regional parties, who are retiring today, it is a special occasion. Coming from far off places, with a totally new environment, with difficulties in the language adjustments, they have adjusted themselves to the new environment, and, they did there very best in the last six years. I thank all of them and wish them all the best in their life.

श्री शाहिद सिद्दिकी (उत्तर प्रदेश): धन्यवाद, सर! परसों जब दास मुंशी जी ने हम सब के लिए महफिल सजाई थी, तो मैं यह सोचकर वहां गया था कि मैं वहां अपने साथियों की विदाई के लिए जा रहा हूं। लेकिन वहां जाकर पता चला कि मैं भी विदा हो रहा हूं। तो यह बड़ा खट्टा-मीठा एहसास था।

सर, जब मैंने कॉलेज छोड़ा, उस वक्त हमें एहसास हुआ था कि हम दोस्तों को छोड़कर जा रहे हैं और शायद मुझे जिंदगी में ऐसे दोस्त कभी न मिलें। सर, मेरी जिंदगी का यह तजरबा रहा कि जो कॉलेज के दोस्त थे, उस के बाद acquaintances बहुत बने, लेकिन दोस्त नहीं बने! आज जब इस हाउस को छोड़ कर जाने का हमारा वक्त आया है, तो फिर एक बार वही एहसास हो रहा है, जो कॉलेज को छोड़ते वक्त हमारे दिल में था, उन दोस्तों को छोड़ते वक्त हमारे दिल में था, क्योंकि जो यहां पर एक बॉंड बनता है, वह बॉंड उसी क्लास-रूम की तरह से है। मैं तो इसको क्लास ऑफ 2008 कहूंगा और यह जो हमारा 2008 का batch है, इसको छोड़कर हम जा रहे हैं और तमाम उन यादों को लेकर जा रहे है।

सर, जब हम इस हाउस में आए थे, तो हम समझते थे कि हम बहुत कुछ जानते हैं, हम समझते थे कि हमने बहुत कुछ पढ़ा है, हम समझते थे कि हमें बोलना आता है, लेकिन इस हाउस में आकर हमें पता लगा कि हमें बोलना नहीं आता है, हमने बहुत कम पढ़ा है, हम बहुत कम जानते हैं। यह एहसास उसी को हो सकता है, जो इस हाउस में आता है। बाहर बैठे हुए हम कितना भी टेलीविजन पर देखें या कितना भी ऊपर से देखें, हम नहीं समझ सकते कि इस हाउस में बैठना, यहां पर जानना, यहां पर सीखना क्या है? यहां पर आकर आदमी जो सीखता है, वह जिंदगी में कहीं नहीं सीख सकता, कभी नहीं सीख सकता, चाहे वह कितनी ही किताबें पढ़ ले, कितने ही उसे दूसरे मौके मिल जायें।

सर, मैं दोनों फरायज़ अदा कर रहा हूँ, क्योंकि नवंबर में हमको जाना भी है। मैं अपनी पार्टी की तरफ से जो हमारे साथी जा रहे हैं, आज हमसे बिछड़ रहे हैं, उनको अलविदा कह रहा हूँ। मुझे भी बेहद तकलीफ होगी, अफसोस होगा, सुरेश पचौरी जी के जाने का, क्योंकि इनसे मेरा पुराना ताल्लुक तो था, मगर इस हाउस में आने के बाद जब यह इधर थे तो हमने इनका रंग देखा, इनका ढंग देखा, इनका जोश देखा, इनका अंदाज देखा, इनकी आवाज देखी और जो इनकी आवाज की बुलंदी थी, उस बुलंदी तक मैं कभी नहीं पहुंच सका और न पहुंच पाऊंगा। यह सारी ट्रेजरी बैंच के लिए अकेले काफी हुआ करते थे। वहां पहुंचे, तो शायद वहां मजबूरी थी, नौकरी की मजबूरी थी, आवाज़ दबी है, लेकिन मुझे यकीन है कि जब मध्य प्रदेश जाएंगे, तो इनकी आवाज बुलंद होगी और बुलंद से बुलंदतर होती चली जाएगी और इनकी आवाज के आगे शायद, खुदा से दुआ यह है, इनकी आवाज के आगे किसी की आवाज न ठहर पाए।

सर, शत्रुघ्न सिन्हा जी मौजूद नहीं हैं। वह भी मेरे बहुत पुराने दोस्त हैं, उनको भी मैंने एक इंसान की हैसियत से जाना है। मैं यह यकीन के साथ कह सकता हूं कि मैं चंद जिन बहुत सेकुलर लोगों से मिला हूं, उनमें से शत्रुघ्न सिन्हा एक हैं और आज अगर वह इस हाउस में नहीं होंगे, तो इस हाउस में जो एक रंग था, एक मस्ती थी, एक स्पोंटेनीटी थी, उनके यहां एक स्पोंटेनीटी है, वह चीजें सोचकर, प्लान कर बोलने वाले इंसान नहीं थे, वह स्पोंटेनीटी हमारा हाउस मिस करेगा।

भंडारी जी से मैं यहां आकर मिला और मैंने देखा कि किस तरीके से उनकी जो समझ है, उनके अंदर जो ठहराव है, जो शांति है, वह जैसे पानी का एक बहता हुआ दरिया होता है उस दरिया के अंदर जो एक शांति होती है, वैसी शांति हमारे भंडारी जी के अंदर रही है। भंडारी जी, मुझे यकीन है और दुआ है कि आप वापस लौट कर यहां आएंगे। चन्द्रशेखर रेड्डी जी के साथ यहां हाउस में भी ताल्लुक रहा है और पीछे इनके साथ अमरीका जाने का मौका मिला, इस दौरान अंदाजा हुआ कि इनके अंदर कितनी गहराई है, कितनी समझ है। इस हाउस में तो मैंने यह महसूस किया कि इस हाउस का मामूली से मामूली आदमी भी इतनी नॉलेज रखता है, इतनी समझ रखता है कि जब कभी उसे सुनने का मौका मिलता है तो हम लोग उससे कुछ न कुछ सीखते हैं। हमने यहां पर सबसे ज्यादा अलेक्जेन्डर जी से सीखा। अलेक्जेन्डर जी हम लोगों के लिए एक ऐसे आइडल होते थे, जिनके बारे में हम बचपन से सुनते थे, पढ़ते थे, समझते थे और सोचते थे कि पता नहीं कितने सौ साल की इनकी उम्र होगी, लेकिन आज भी अलेक्जेन्डर साहब जिस तरह से जेहनी तौर पर जवान हैं, मेरी दुआ है कि उसी तरह से जवान रहें और उस जवानी के साथ समाज के लिए, मुल्क के लिए उनका कंट्रीब्यूशन जारी रहे, कायम रहे।

सर, हमारे बहुत सारे साथी वापस लौट कर इस हाउस में आ रहे हैं, जिसके लिए खुशी है और मेरी दुआ है कि ऐसे ही और बहुत से लोग वापस आएं। हम उत्तर प्रदेश वाले नवंबर में जो रिटायर करेंगे, लेकिन हमारी दरखास्त यह है कि हमें वंचित मत कर दीजिएगा, एक बार फिर से इस तरह की महफिल सजाने का, बोलने का और बुलवाने का मौका दीजिएगा और अगर बजट में गुंजाइश हो, तो एक महफिल इसी तरह गजलों की हमारे लिए भी सजा दीजिएगा, ताकि इसी बहाने से एक बार फिर सब के साथ बैठ सकेंगे। बहुत शुक्रिया।

† [شری شاہد صدیقی "اتر پردیش": دھنیواد سر، پرسوں جب داش گپتا جی نے ہم سب کے لئے محفل سجائی تھی، تو میں یہ سوچ کر وہاں گیا تھا کہ میں وہاں اپنے ساتھیوں کی وداعی کے لئے جا رہا ہوں۔ لیکن وہاں جا کر پتہ چلا کہ میں بھی وداع ہو رہا ہوں۔ تو یہ بڑا کھٹا میٹھا احساس تھا۔

سر، جب میں نے کالج چھوڑا، اس وقت ہمیں احساس ہوا تھا کہ ہم دوستوں کو چھوڑ کر جا رہے ہیں اور شاید مجھے زندگی میں ایسے دوست کبھی نہ ملیں۔ سر، میری زندگی کا یہ تجربہ رہا کہ جو کالج کے دوست تھے، اس کے بعد acquaintances بہت بنے لیکن دوست نہیں بنے۔ آج جب اس ہاؤس کو چھوڑ کر جانے کا ہمارا وقت آیا ہے، تو پھر ایک بار وہی احساس ہو رہا ہے، جو کالج کو چھوڑتے وقت ہمارے دل میں تھا، ان دوستوں کو چھوڑتے وقت ہمارے دل میں تھا، کیوں کہ جو یہاں پر ایک بانڈ بنتا ہے، وہ بانڈ اسی کلاس روم کی طرح سے ہے۔ میں تو اس کو کلاس آف ۲۰۰۸ کہوں گا اور یہ جو ہمارا ۲۰۰۸ کا بیچ ہے، اس کو چھوڑ کر ہم جا رہے ہیں اور تمام ان یادوں کو لے کر جا رہے ہیں۔

سر، جب ہم اس ہاؤس میں آئے تھے، تو ہم سمجھتے تھے کہ ہم بہت کچھ جانتے ہیں، ہم سمجھتے تھے کہ ہم نے بہت کچھ پڑھا ہے، ہم سمجھتے تھے کہ ہمیں بولنا آتا ہے، لیکن اس ہاؤس میں آ کر ہمیں پتہ لگا کہ ہمیں بولنا نہیں آتا

† [Transliteration in Urdu Script].

ہے، ہم نے بہت کم پڑھا ہے، ہم بہت کم جانتے ہیں۔ یہ احساس اسی کو ہو سکتا ہے، جو اس ہاؤس میں آتا ہے۔ باہر بیٹھے ہوئے ہم کتنا بھی ٹیلی ویژن پر دیکھیں یا کتنا بھی اوپر سے دیکھیں، ہم نہیں سمجھ سکتے کہ اس ہاؤس میں بیٹھنا، یہاں پر جاننا، یہاں پر سیکھنا کیا ہے؟ یہاں پر آ کر آدمی جو سیکھتا ہے، وہ زندگی میں کہیں نہیں سیکھ سکتا، کبھی نہیں سیکھ سکتا، چاہے وہ کتنی ہی کتابیں پڑھ لے، کتنے ہی اسے دوسرے موقع مل جائیں۔

میں دونوں فرائض ادا کر رہا ہوں، کیوں کہ نومبر میں ہم کو بھی جانا ہے۔ میں اپنی پارٹی کی طرف سے جو ہمارے ساتھی جا رہے ہیں، آج ہم سے بچھڑ رہے ہیں، ان کو الوداع کہہ رہا ہوں۔ مجھے بھی بہت تکلیف ہوگی، افسوس ہوگا، سریش پچوری جی کے جانے کا، کیوں کہ ان سے میرا پرانا تعلق تو تھا، مگر اس ہاؤس میں آنے کے بعد جب یہ ادھر تھے تو ہم نے ان کا رنگ دیکھا، ان کا ڈھنگ دیکھا، ان کا جوش دیکھا، ان کا انداز دیکھا، ان کی آواز دیکھی اور جو ان کی آواز کی بلندی تھی، اس بلندی تک میں کبھی نہیں پہنچ سکا اور نہ پہنچ پاؤں گا۔ یہ ساری ٹریجری بینچ کے لئے اکیلے کافی ہوا کرتے تھے۔ وہاں پہنچے تو شاید وہاں مجبوری تھی، نوکری کی مجبوری تھی، آواز دبی تھی، لیکن مجھے یقین ہے کہ جب مدھیہ پردیش جائیں گے، تو ان کی آواز بلند ہوگی اور بلند سے بلند تر ہوتی چلی جائے گی اور ان کی آواز کے آگے شاید، خدا سے دعا یہ ہے، ان کی آواز کے آگے کسی کی آواز نہ ٹھہر پائے۔

سر، شتر گھن سنہا جی موجودہ نہیں ہیں۔ وہ بھی میرے بہت پرانے دوست ہیں، ان کو بھی میں نے ایک انسان کی حیثیت سے جانا ہے۔ میں یہ یقین کے ساتھ کہہ سکتا ہوں کہ میں چند جن بہت سیکولر لوگوں سے ملا ہوں، ان میں سے شتر وگھن سنہا ایک ہیں اور آج اگر وہ اس ہاؤس میں نہیں ہونگے، تو اس ہاؤس میں جو ایک رنگ تھا، ایک مستی تھی، ایک سپونٹینیٹی تھی، ان کے یہاں ایک سپونٹینیٹی ہے، وہ چیزیں سوچ کر، پلان کر کے بولنے والے انسان نہیں تھے، وہ سپونٹینیٹی ہمارا ہاؤس مس کریگا۔

بھنڈاری جی سے میں یہاں آ کر ملا اور میں نے دیکھا کہ کس طریقے سے ان کی جو سمجھ ہے، ان کے اندر جو ٹھہراؤ ہے، جو شانتی ہے، وہ جیسے پانی کا ایک بہتا ہوا دریا ہوتا ہے اس دریا کے اندر جو ایک شانتی ہوتی ہے، ویسی شانتی ہمارے بھنڈاری جی کے اندر رہی ہے۔ بھنڈاری جی، مجھے یقین ہے اور دعا ہے کہ آپ واپس لوٹ کر یہاں آئیں گے۔ چندر شیکھر ریڈی جی کے ساتھ یہاں ہاؤس میں بھی تعلق رہا ہے اور پیچھے ان کے ساتھ امریکہ جانے کا موقع ملا، اس دوران اندازہ ہوا کہ ان کے اندر کتنی گہرائی ہے، کتنی سمجھ ہے۔ اس ہاؤس میں تو میں نے محسوس کیا کہ اس ہاؤس کا معمولی سے معمولی آدمی بھی اتنی نالج رکھتا ہے، اتنی سمجھ رکھتا ہے کہ جب کبھی اسے سننے کا موقع ملتا ہے تو ہم لوگ اس سے کچھ نہ کچھ سیکھتے ہیں۔ ہم نے یہاں پر سب سے زیادہ الیکزینڈر جی سے سیکھا۔ الیکزینڈر جی

ہم لوگوں کے لئے ایک ایسے آئیڈیئل ہوتے تھے، جن کے بارے میں ہم بچپن سے سنتے تھے، پڑھتے تھے، سمجھتے تھے اور سوچتے تھے کہ پتہ نہیں کتنے سو سال کی ان کی عمر ہوگی، لیکن آج بھی الیکزینڈر صاحب جس طرح سے ذہنی طور پر جوان ہیں، میری دعا ہے کہ اسی طرح سے جوان رہیں اور اس جوانی کے ساتھ سماج کے لئے، ملک کے لئے ان کا کنٹری بیوشن جاری رہے، قائم رہے۔ سر، ہمارے بہت سارے ساتھی واپس لوٹ کر اس ہاؤس میں آرہے ہیں، جس کے لئے خوشی ہے اور میری دعا ہے کہ ایسے ہی اور بہت سے لوگ واپس آئیں۔ ہم اتر پردیش والے نومبر میں ریٹائر کریں گے، لیکن ہماری درخواست یہ ہے کہ ہمیں ونچت مت کر دیجئے گا، ایک بار پھر سے اس طرح کی محفل سجانے کا، بولنے کا اور بلوانے کا موقع دیجئے گا اور اگر بجٹ میں گنجائش ہو، تو ایک محفل اسی طرح غزلوں کی ہمارے لئے بھی سجا دیجئے گا تا کہ اسی بہانے سے ایک بار پھر سب کے ساتھ بیٹھ سکیں گے۔ شکریہ۔

प्रो॰ राम देव भंडारी: माननीय सभापति जी, ऐसे ही अवसर पर पिछली बार, जब विदाई समारोह हो रहा था, मैंने अपनी तथा अपनी पार्टी की ओर से अवकाश प्राप्त कर रहे सांसदों को शुभकामनाएं दी थीं। आज मुझे दोहरी जवाबदेही पूरी करनी पड़ रही है-एक तो जो सांसद अवकाश प्राप्त करके जा रहे हैं, उनको शुभकामनाएं दे रहा हूं और दूसरे अपनी ओर से भी कुछ भावनाएं सदन के समक्ष व्यक्त करना चाहता हूं।

माननीय सभापति जी, मेरे लिए यह एक ऐतिहासिक क्षण है। 16 बरस तक सदन का सदस्य रहने के पश्चात अवकाश ग्रहण कर रहा हूं और यह मेरे कार्यकाल का अंतिम भाषण है। मैं चाहूंगा कि इस अंतिम भाषण के द्वारा, जो कुछ भावनाएं मेरे मन में हैं, उन्हें मैं सदन के रिकार्ड पर लाऊं।

सभापति जी, कौन जाने जीवन की राह में यह मुकाम फिर आता है या नहीं आता, यह सदन फिर बुलाता है या नहीं बुलाता। मैं अपने जीवन के कुछ राजनीतिक पहलू, जिनके बारे में सदन को जानकारी नहीं है, इस अंतिम भाषण के माध्यम से आपके समक्ष रखना चाहता हूं।

सभापति जी, मैं पहली बार जुलाई, 1992 में जनता दल की ओर से सदन में आया। उस समय श्री लालू प्रसाद जी बिहार के मुख्य मंत्री थे। आज वे राष्ट्रीय जनता दल के अध्यक्ष और भारत के रेल मंत्री हैं। उन्होंने अपने मंत्रिमंडल के एक साथी के द्वारा मुझे संदेश दिया कि मैं उनसे मिलूं और शाम को जब मैं उनसे मिला, उन्होंने मेरी प्रशंसा की, मेरे राजनीतिक जीवन की प्रशंसा की, मेरी जो ऐकेडमिक क्वालिफिकेशंस थीं, उनकी प्रशंसा की और फिर कहा कि आप राज्य सभा में जाइए, कल आप अपना नॉमिनेशन कर दीजिए। उन्होंने यह भी कहा कि आप प्रोफेसर हैं, वहां बहुत बड़ी लाइब्रेरी है, आप खूब पढ़िए और भाषण दीजिए। मैं तो स्तब्ध और आश्चर्यचकित रह गया। संभवत: बिहार ही नहीं, देश के इतिहास में पहली बार अत्यंत पिछड़ा वर्ग के एक कार्यकर्ता को उच्च सदन में भेजा जा रहा था। इसके बाद भी श्री लालू प्रसाद जी ने बिहार के चार सदस्यों को, जो अत्यंत पिछड़ा वर्ग के थे, उनको बारी-बारी से सदन में भेजा। आज ऐसा समय आ गया है कि मैं और श्री मंगनी लाल मंडल जी, हम दोनों अत्यंत पिछड़ा वर्ग के हैं, हम दोनों आज सदन से अवकाश प्राप्त कर रहे हैं।

महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं कि भारतीय लोकतंत्र की यह विशेषता है कि इसके फूलों की सुगंध न सिर्फ महलों में, बल्कि झोंपड़ी तक पहुंचती है। आवश्यकता है सामाजिक न्याय के लिए समर्पित नेता की, जो उसकी सुगंध झोंपड़ी तक फैला सके।

महोदय, बिहार में उस वक्त सामाजिक न्याय की बड़ी मजबूत धारा बह रही थी। तत्कालीन नेताओं में सामाजिक न्याय के सिद्धान्त के लिए बड़ा जोश और जज्बा था। सबसे निचले पायदान पर बैठे व्यक्ति को मुख्य धारा में लाने का जोरदार प्रयास चल रहा था। गांधी, लोहिया, अम्बेडकर, कर्पूरी के पदचिन्हों पर चलकर सामाजिक न्याय और धर्म निरपेक्षता की बुनियाद पर उन्हें सपनों का बिहार बनाना था। आज अलग-अलग हैं, मगर समाजवाद को मजबूत करने में लगे हुए हैं।

महोदय, मेरी राजनीति की बुनियाद बिहार के एक बार उप मुख्य मंत्री तथा दो बार मुख्य मंत्री रहे जननायक कर्पूरी जी के चरणकमलों में 1965 में पड़ी, जब मैं पटना विश्वविद्यालय में छात्र था। एक बार जब मैं कर्पूरी जी के साथ लगा, तो उनके जीवन के अंत तक उन्हीं के साथ रहा। उनके जैसा कर्मठ, ईमानदार, गरीबों का रहनुमा, विरला ही पैदा होता है। वे मेरे प्रेरणा स्रोत रहे हैं। उनके बाद श्री लालू प्रसाद जी मेरे स्वाभाविक नेता बन गए, जिन्होंने 1992 से आज तक मुझे इस सदन का लगातार सदस्य बनाकर रखा। मैं भी पूरी ईमानदारी, लगन, निष्ठा से दल तथा नेता के प्रति समर्पित रहा। मैं आज उनका हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं।

महोदय, थोड़ा समय ले रहा हूं, लेकिन चूंकि आज यह मेरा अंतिम भाषण है, इसलिए मैं समझता हूं कि आप मुझे इसकी अनुमति देंगे।

सभापति जी, मुझे इस बात का फख्र है कि मैंने अपने राजनीतिक जीवन में दल नहीं बदला। ईमानदारी और निष्ठा से दल के उसूलों, सिद्धान्तों और कार्यक्रमों में संकल्प के साथ लगा रहा। नेता और दल के प्रति पूरी तरह समर्पित और निष्ठावान रहा।

सभापति जी, मैं अविभाजित जनता दल में राष्ट्रीय महासचिव था। श्री लालू प्रसाद जी अध्यक्ष तथा श्री शरद यादव जी, जो इस समय यहां नहीं हैं, वे कार्यकारी अध्यक्ष थे। 1997 में राष्ट्रीय जनता दल का गठन हुआ, तो श्री लालू प्रसाद जी ने मुझे एकमात्र राष्ट्रीय महासचिव नियुक्त किया। आज मैं दल का प्रधान महासचिव और सदन में दल का नेता हूं। कमजोर वर्गों को सामाजिक न्याय की मुख्य धारा में जोड़ने का यह मजबूत उदाहरण है।

सभापति जी, अब मैं सदन के बारे में अपने कुछ अनुभव आपको बताना चाहता हूं। जब मैं पहली बार सदन में आया था, तो मुझे पिछली पंक्ति में बैठने की जगह मिली थी। श्री जयपाल रेड्डी जी, जो अभी मंत्री हैं, वे राज्य सभा में मेरे दल के नेता थे, उन्होंने मेरे गुरू का स्थान लिया और मेरा मार्गदर्शन किया। नया सदस्य होने की वजह से मुझे पिछली पंक्ति में बैठने की जगह मिली थी। मैं अपनी सीट पर वहां खड़ा था, कौतूहलवश मैंने जब एक छोर से दूसरे छोर को देखा, तो ऐसा लगा कि पूरा देश सिमटकर सदन में आ गया है। देश के विविध रंग, वेशभूषा, भाषा, परंपरा और संस्कृति की पूरी झांकी मिल रही थी। सदन में अन्य दलों के राष्ट्रीय नेता भी विराजमान थे, इनमें से कई नेताओं को मुझे सदन के बाहर देखने और सुनने का अवसर मिला था, मगर रूबरू होने तथा उनके साथ विचार-विमर्श और वाद-विवाद करने का अवसर नहीं मिला था। शुरू के कुछ महीने दिन भर सदन में बैठकर उनका भाषण सुनने और सदन की कार्यवाही देखने में निकल गए। फिर मैंने धीरे-धीरे सदन की कार्यवाही में भाग लेना शुरू किया। मैं अपनी ओर से पूरी तैयारी करके, बहुत संभलकर सदन में बोलता था कि कहीं ऐसी कोई बात न निकल जाए, जिससे विषय के प्रति अज्ञानता जाहिर हो और मैं हंसी का पात्र बन जाऊं। ऐसे में वरिष्ठ नेतागण, चाहे वे किसी भी दल के हों, वे नए सदस्यों को बड़ा स्नेह और सहारा देते हैं तथा सभापति जी के आसन से भी उन्हें प्रोसाहन मिलता है।

सभापति जी, जब 1996 में जनता दल की सरकार बनी, तो श्री देवेगौड़ा जी प्रधान मंत्री हुए। उस समय मैं इस दल का Chief Whip था। आदरणीय गुजराल साहब इस सदन के नेता थे, मैं Chief Whip का काम कर रहा था और जब काम समाप्त हो गया, तो उन्होंने मुझे बुलाकर कहा कि भंडारी जी, आपने बहुत अच्छा काम किया है, एक delegation चीन जा रहा है, आप उसके साथ चले जाइए। श्रीमती सुषमा स्वराज, उस delegation में थीं, स्वर्गीय महाजन साहब भी उस delegation में थे, और भी कई बड़े नेता थे।

सभापति जी, मैं 2004 से लगातार सदन में अपने दल का नेता रहा हूं और उससे पहले 1996 से 2004 तक अपने दल का Chief Whip रहा हूं मैं बहुत ही साधारण किसान परिवार से आता हूं। मुझे राजनीतिक विरासत में कुछ नहीं मिला है, हां, मेरे मामाजी, एक समाजवादी नेता थे। मेरी पढ़ाई-लिखाई और जीवन की राह में आगे बढ़ने में, मेरी मां का मुख्य योगदान रहा है। उन्होंने मुझे पढ़ा-लिखाकर इस लायक बनाया कि मैं कालेज में गणित का Lecturer बन गया

और मैंने Professor के पद पर पहुंचकर अवकाश लिया। आज मेरी मां नहीं है, लेकिन वे आज भी मेरी प्रेरणा की स्रोत हैं।

सभापति जी, यह सदन काउंसिल ऑफ स्टेट्स है। संपूर्ण देश से अपने क्षेत्रों के विशिष्टता प्राप्त व्यक्तित्व इस सदन में आते हैं। देश के एक से एक महान राजनीतिज्ञ, प्रकांड विद्वान, अर्थशास्त्री, वैज्ञानिक, विधिवेत्ता, साहित्यकार, संपादक, फिल्म और रंगमंच की दुनिया के नामी-गिरामी कलाकार, देश और दुनिया के जाने-माने उद्योगपति, इस सदन की शोभा बढ़ाते हैं। इनके बीच रहकर मुझे इनसे बहुत कुछ सुनने और सीखने का अवसर मिला है, जो मेरे जीवन की बहुत बड़ी ताकत होगी और मेरा मार्गदर्शन करती रहेगी।

सभापति जी, उच्च सदन के इस भारतीय परिवार में बड़ी ताकत है, जो सभी को अटूट बंधन में बांधकर रखती है और इस बंधन से कोई मुक्त नहीं हो सकता है। मैं भी उसी बंधन में बंधा हुआ हूं। भेले ही हम दूर चले जाएं, लेकिन हमारा दिल हमेशा पास-पास है। इस अवसर पर मैं यह कहना चाहता हूं कि—

''वक्त की शाख से लम्हें नहीं छूटा करते,

हाथ छूटे भी तो रिश्ते नहीं टूटा करते।''

हम देश के किसी भी कोने में रहें, हम अवश्य मिलेंगे, हमारा स्थान भले ही बदल जाए, लेकिन हमारे लक्ष्य और आदर्श नहीं बदलेंगे और हम जहां भी रहेंगे, देश की सेवा करते रहेंगे।

सभापति जी, मैं बड़े भारी मन से इस सदन से विदाई ले रहा हूं। मैं किन्हें याद करुं और किन्हें याद न करूं, यह मुझे समझ में नहीं आ रहा है। मैं सैकड़ों मीठी यादें लेकर इस सदन से जा रहा हूं। सभी ने मुझ पर स्नेह की वर्षा की है। सभापति जी, मैं आपका आभार प्रकट करना चाहूंगा, मैं उपसभापति जी का आभार प्रकट करना चाहूंगा, मैं सदन के नेता, माननीय प्रधान मंत्री जी का आभार प्रकट करना चाहूंगा, मैं विरोधी दल के नेता, श्री जसवन्त सिंह जी का आभार प्रकट करना चाहूंगा, मैं संसदीय कार्य मंत्री, श्री प्रियरंजन दास मुंशी जी का आभार प्रकट करना चाहूंगा, प्रणव बाबू सदन में मौजूद नहीं हैं, मैं माननीय गृह मंत्री, श्री शिवराज वी. पाटिल जी का आभार प्रकट करना चाहूंगा, मैं संसदीय कार्य राज्य मंत्री, श्री पचौरी साहब का आभार प्रकट करना चाहूंगा, मैं श्री मोती लाल वोरा जी का आभार प्रकट करना चाहूंगा, जिनका आशीर्वाद मुझे हमेशा मिलता रहा है, वे मेरी बगल में बैठते रहे हैं, श्री येचुरी साहब हैं। सुषमा जी हैं, उनका भी स्नेह मुझे बहुत मिला है। और भी कई नेता हैं जिनका मैं नाम लेना चाहता हूं, मैत्रेयन साहब हैं, जो AIADMK के नेता हैं, रावुला चन्द्रशेखर रेड्डी जी हैं, जो मेरे साथ अवकाश प्राप्त कर रहे हैं, श्री मनोहर जोशी हैं, श्री जनार्दन द्विवेदी, श्री नारायणसामी, श्रीमती वृंदा कारत, श्री उदय प्रताप सिंह, श्री तारिक अनवर, अहलुवालिया साहब, बागड़ोदिया जी हैं, प्रो. कुरियन हैं, गांधी आज़ाद जी, डा॰ राजा साहब और माननीय मंत्रीगण श्री महावीर प्रसाद, अंतुले साहब, भारद्वाज जी, वायालार रवि जी हैं, मणि शंकर अय्यर जी हैं, मुरली देवरा जी हैं, आनन्द साहब हैं, गावित साहब हैं और साथ ही षण्मुगसुन्दरम जी, डी.एम.के. के पीछे बैठे हुए हैं, किन-किन का नाम लूं, सभी ने मुझे बहुत स्नेह दिया है। एक बार पुनः मैं आप सभी का आभार व्यक्त करता हूं, सभी को प्रणाम, नमस्कार, आदाब, सत् श्री अकाल कहते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं और होली की शुभकामनाएं देता हूं, बहुत-बहुत धन्यवाद।

SHRI RAVULA CHANDRA SEKAR REDDY (Andhra Pradesh): Thank you, Sir. I am thankful to you all the Members of this august House for all the support extended to me.

Sir, I come from a remote village. I reached the Parliament from the Panchayat. I served the Andhra Pradesh Assembly for five years. I served this august House for six years. I have learnt many things from here. I am grateful to my party founder, Dr. N.T.R., who taught us self-respect. I am thankful to my leader, Mr. Chandrababu Naidu, who encouraged me and helped to develop self-confidence. I am particularly thankful to all party leaders. I am also thankful to all the Presiding Officers starting from late Krishan Kantji, Shekhawatji and you. I am also grateful to Rahman Sahib. I can't forget his broad smile. I am thankful to all the leaders of various political parties, especially, Sushmaji.

I have only one regret. We thought that during our tenure the Women Reservation Bill would be passed. But it was not. I request the hon. Prime Minister, at least, to see to it that

the Women Reservation Bill is passed in the coming days. We have been pleading for its passing for many years.

The second point is the most painful thing of farmers' suicide. It is still on the rise. Apart from the steps taken by the Government, I think that some more steps need to be taken in future so that farmers' suicide can be stopped.

The third, and the most important, point is recognising my mother tongue, Telugu, as a Classical language. We have been pleading, we have been agitating, for a long time. I can only request the Government; I can't demand since I am leaving the House. I request the Prime Minister to see to it that Telugu is recognised as a Classical Language.

Finally, I thank everybody in this august House. I thank the Secretary-General and all the officers and the Watch and Ward of this House. I am thankful to everybody.

SHRI MANOHAR JOSHI (Maharashtra): Mr. Chairman, Sir, thank you very much for giving me permission to speak a few words on this occasion. I am really confused whether I am speaking in the same Rajya Sabha, where I speak whenever it is possible, because, today, I find that those people who used to make allegations against each other are appreciating the other Members. This is something unique to me. I must say that retirement is inevitable to everybody. Therefore, retiring from this House does not mean that the work is over. In fact, my experience is that whenever you retire from one House, you always get a promotion. Therefore, Shri Pachouri need not worry about it. If somebody retires from this House, sometimes, he becomes a member of Lok Sabha, and, sometimes, he becomes the Speaker of Lok Sabha. Therefore, nobody should worry about retirement. In fact, I honestly feel that there is a lot of work which can be done outside this House. Therefore, my sincere good wishes to Members of all the parties who are retiring today. I wish them all the best and grand success in life. I have to refer to one or two Members. I would particularly refer to Dr. P.C. Alexander because we have got relations for a very long time. he was the Governor of Maharashtra for two terms. This was probably the very first instance when the Governor was repeated for the second term. My Party did support him to become the Governor for the second time. He was the best administrator and the perfect Governor and also a very honest man. As Chief Minister, my relations with Dr. Alexander were extremely good. I remember an occasion, which I would like to mention here. He was a fine administrator and he wanted the administration to be non-corrupt. I do not know whether Dr. Alexander remembers it or not. One day when we were travelling together, Dr. Alexander asked me, "Mr. Joshi—he used to call me Mr. Chief Minister—what might be the percentage of officers who are non-corrupt in the Government?" I told him that 50 per cent of the officers might be non-corrupt. He argued with me and said, "Such a big number". It shows that he did not want even 50 per cent officers to be non-corrupt or corrupt. I said, "You can discuss it with the Chief Secretary who knows better, who is corrupt and who is non-corrupt". He called the Chief Secretary and asked, 'What is the percentage of non-corrupt officers in the Government?" The Chief Secretary said, "Sir, the Chief Minister was wrong in telling you that 50 per cent of the officers are non-corrupt. The number is more." Dr. Alexander got very much disturbed. I was

5.00 P.M.

really happy that the Governor was taking such a keen interest in keeping the administration clean. There are a lot of instances which can be mentioned in this House. But I would not like to go into that because this is not the occasion to do so. Sir, we, in our country, need people like Dr. Alexander. I am really sorry that he is retiring from this House. I have heard his speeches here.

I would like to mention about my colleague, a Member of my Party, whom I can never forget. He is Shri Ekanath Thakur. Most of us do not know what Shri Ekanath Thakur is. He is the most brilliant person, highly qualified, hardworking and sincere. In Mumbai, he is a trade unionist as well as management consultant. I do not know how he can do both the things together. बातें बहुत कम करते हैं लकिन एक्शन बहुत लेते हैं A Probably, the House may not be knowing that for the last 32 years he is suffering from cancer..

श्रीमती सुषमा स्वराज: कैंसर विजेता हैं।

SHRI MANOHAR JOSHI: Sushmaji, you are absolutely right. People get a number of awards. But Shri Ekanath Thakur was given an award of 'Cancer Vijeta'. An award was given to him for his strength, his determination and for fighting a disease like cancer. But, even in these circumstances, he has been working hard in Parliament, not only by way of speeches, but also in the interest of the growth of my party. I wish him good luck, and I am sure that his retiring does not mean that he is retiring from politics. I know that Shri Ekanath Thakur will be coming back to Lok Sabha, in his odd time; it depends upon the Prime Minister, if he takes the elections early, he will come early. But he is positively going to come because the party wants him to be in Parliament.

To say a few words about Prof. Ram Deo Bhandary, I heard him for the third time in the short period of two or three days; I heard him in the Balayogi Auditorium also, and I heard him here. I have to compliment him for one thing that till the date of retirement, till the last hour, he is working in Parliament. We want such type of Members in the House. May be, he is from Bihar, but he is really a good man...(Interruptions) I do not know why people misunderstand me. I find him to be a very nice man. Mainly, he is a cultured man. So, I must congratulate him for what he is doing. मेरी दृष्टि से मैं सुरेश पचौरी जी को फिर एक बार धन्यवाद देता हूं, जिस तरह से वे सदन में सभी को साथ लेकर काम कर रहे थे। अब फिर मध्य प्रदेश जा रहे हैं। मध्य प्रदेश में भी आपकी तरक्की होगी, क्योंकि मैंने कहा है कि जो रिटायर होता है उसकी प्रोग्रेस जरुर होती है।

यहां मेरे मित्र चन्द्रशेखर जी भी बैठे हुए हैं। Shri Ravula Chandra Sekar Reddy is also a thorough gentleman. In this House, I have seen that the people are extremely good. They are very nice. well-behaved, before the House starts. Otherwise, they are all good friends. Therefore, I wish everybody, retiring today, all success in life. I have nothing more to add. But, sometimes, I really feel whether it is necessary to be in politics for serving the society. I am not sure that those who may not be able to come to the House back—there may be constraints for their leaders—they can do social work better outside than coming to the House. Therefore, my good wishes to everybody and thanks to everybody.

DR. BIMAL JALAN (Nominated): Sir, I do not want to take too much of your time at this stage except to add my voice as well as that of my colleagues on this Bench of Nominated Members, who do not have a party affiliation, to share the thoughts in the words of appreciation

which have been expressed for those who are leaving the House. From a non-party perspective, the only point that I want to make is that irrespective of whichever party they belong, either on this side or that side—some who were on the other side are on this side now and similarly those who were on this side are on the other side now—some of the brightest people from different walks of life are in this House. Now, getting here is not easy. The numbers are few; we do not realise how few they are. There are only around 800 Members in the Houses of Parliament from the whole country of 100 crore people. So, to get here from any party perspective, from the bottom to this high level, is not easy. And you can see this in the interventions, in their commitment to the party ideology, party programmes, but above all, to the commitment to our country's good. Sir, I would like to bring to your notice, which I had not realised, that I had participated in the functioning of this House in some way from that corner as well as appeared before several Standing Committees, in particular. What has struck me the most is the work of the Standing Committees. And I would like to put it that this is irrespective of whichever party the experts and the brightest of our land belong to. Whenever any matter comes before a Standing Committee, one cannot imagine and one cannot see which party they belong to because what they are worried about and what they are thinking about is just the subject itself.

Now, some of those who are retiring will not be coming back and they have been mentioned, like Mr. Pachouri and Mr. Poojary with whom I have worked. I have appreciated their kindness to us. And, of course, there is the iconic figure of Dr. Alexander who has contributed so much in so many different walks of life.

I just want to tell you that it has been a privilege for us to watch the people work, and of those who are leaving, I do not really think they are leaving. If they do not come back here, they are, I am absolutely sure, going to continue to serve the country in whatever walk of life they come from.

I just take this opportunity to convey the best wishes of all of us from this side of the House. Thank you very much.

SHRI D. RAJA (Tamil Nadu): Mr. Chairman, Sir, this is my third session of the Parliament. In that way, I am the junior most to bid farewell to our retiring Members. Sir, I have known many of them outside the Parliament earlier and my beloved brother, Shri Suresh Pachouri was one of the leaders of the Youth Congress, and I was the General Secretary of the All India Youth federation. We had worked together on many issues. We had participated in many international and national events. After coming to parliament, I could watch him work and also watch the work being done by other hon. members. In this short period I did learn a lot from them, like how to conduct oneself in Parliament, how to comprehend issues, how to take up the cause of the people relentlessly. In that respect, I owe my gratitude to these Members.

For a political activist, retirement is only notional. For a political activist, work goes on. His service to the people and his service for the country continues and it will continue.

On behalf of CPI, I join the entire House in wishing them all the best and all success in the coming years. Thank you very much, Sir.

SHRI TIRUCHI SIVA (Tamil Nadu): Mr. Chairman, Sir, parting is always painful. Some unpleasant moments like these, which everyone wants to avoid, do come across in our lives. There is a saying 'we meet, we know, we love, only to part'. But I am sure that we will feel proud in the days to come when we recollect that these retiring Members were our colleagues

in this august House. The debates in which they participated, the deliberations they made, did reflect their vast experience and broad-wisdom. Their prudence added glory to the dignity of this august House.

Sir, we are all from various political parties of different ideologies. These differences might have designed our manner of discussions, but they have never altered the goal of our mission, that is, the nation's interest, the thin thread which binds all of us from various quarters of our country. And this spirit was upheld to the best by all these retiring Members during their days here.

I would like to specially mention here that Shri Shanmugasundaram who is retiring as a Member of this House from our Party, came to my place in 2002. I had the same experience at that time. He served as the Floor Leader of our Party here. Then, I have seen Shri Suresh Pachouri on the other side in those days. His loud voice had been missing all these days, after he had become the Minister. We will miss him in the days to come. This is a very sad aspect that we have to accept. So also about Shri Janardhana Poojary about whom I should mention that he is a person who appreciates and encourages people like us whenever they participate in a debate and make speeches.

All the Members here, especially, my dear friend, Shri Ajay Maroo and Shri Shatrughan Sinha from the BJP, though they are from the Opposition side, all along, they have been our good friends. Sir, we will be missing Janab Syed, Mr. Perumal, Bhandaryji, Premaji and so many other Members. I congratulate them all for their extra-ordinary and remarkable performance in this House. I thank them for their affection, and I wish them all success in their future endeavour. Sir, one thing, I must say that we will miss them in the days to come. Thank you very much, Sir.

कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री सुरेश पचौरी): इज्जत माआब सदर साहब, मैं एक निवृर्तमान सदस्य के रूप में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। 24 साल का राज्य सभा से आज विदाई का यह पल, मेरे लिए अत्यंत मार्मिक और भावविभोर करने वाला है। इस लंबी अवधि में, यह सदन हमेशा मुझे अपनेपन का बोध कराता रहा है। आज अपनी भावना और उद्‌गारों की अभिव्यक्ति के लिए मुझे लग रहा है कि मेरे पास उपयुक्त शब्द नहीं हैं। मान्यवर, जब मैं अतीत में झांकता हूं, तो मुझे अपने दो दिवंगत नेता, इंदिरा जी और राजीव जी की याद आती है। जिनकी मुझ पर न केवल विशेष कृपा रही, बल्कि जिनका मुझे इस सदन में लाने में पूरा श्रेय रहा है। 10 अप्रैल, 1984 का दिन, मेरा इस सदन में आने का पहला दिन था। तब मैं संसदीय जीवन के लिए बिल्कुल ही नया था, पर यह मेरी खुशकिस्मती रही कि उस समय सदन में कई अनुभवी नेता थे, जिनके सानिध्य में, मुझे संसदीय कामकाज के साथ-साथ जनसेवा के विभिन्न आय्रामों की बहुत सारी बारीकियां जानने का मौका मिला। मेरे पहले कार्यकाल के दौरान ही इस सदन में अटल बिहारी वाजपेयी जी जैसे नेता, प्रणब मुखर्जी जैसे अनुभवी और वरिष्ठ नेता और अन्य विभिन्न राजनैतिक पार्टियों से सम्बद्ध संसदीय परंपराओं में भिज्ञ नेता रहे, जिनको सुनने और जानने के बाद, मुझे संसदीय जिम्मेदारियों का निर्वहन करने के लिए, न केवल बहुत अवसर मिले, बल्कि उनसे काफी कुछ प्रेरणा मिली। 24 साल के दौरान, समय-समय पर विभिन्न पीठासीन अधिकारियों और इस सदन के वरिष्ठ सदस्यों के स्नेह और सहयोग से, जैसा मैंने कहा कि मुझे संसदीय प्रणाली जानने का मौका मिला, उनकी बारीकियों में जाने का मौका मिला।

मान्यवर, देश, जनमानस और संसदीय परंपरा को समझने में, यदि मैं यह कहूं तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि मेरे लिए यह सदन सर्वोच्च विद्यापीठ साबित हुआ। डा॰ हिदायतुल्ला, वैंकटरमन जी, डा॰ शंकर दयाल शर्मा जी, श्री के॰ आर॰ नारायणन जी, कृष्णकांत जी, शेखावत जी और अब सम्मानित डा॰ मोहम्मद हामिद अंसारी साहब जैसे महानुभाव सभापति के रूप में जब इस पीठ पर विराजमान हुए और उनका सानिध्य मिला, तो निश्चित रूप से, मैं यह कह सकता हूं कि इस संसद की कई परंपराएं कायम हुईं। मुझे यह कहने में भी कोई संकोच नहीं है कि राज्य सभा मेरे लिए ज्ञानार्जन और अनुभव की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण जरिया रहा है। मैं इस सदन की यादगार को अपनी श्रेष्ठतम यादगारों में हमेशा संजोए रखूंगा। मैं अपने सार्वजनिक जीवन में जन सेवा के लिए उससे प्राप्त अनुभवों का पूरा लाभ उठाते हुए एक धरोहर के रूप में इस्तेमाल करूंगा, क्योंकि यहां मैंने अपनी तरुणाई का काफी जीवन इस सदन के सदस्य के रूप में गुजारा है।

राज्य सभा से सेवानिवृत्ति संसदीय लोकतंत्र की अनूठी विशेषताओं में से एक है। जैसा कि माननीय सदस्यों ने कहा और आपने भी फरमाया कि हर दो वर्ष बाद यह हमें परिवर्तन का अहसास कराती है और निरंतरता के साथ इस सदन को जीवंत बनाए रखती है। यहां पक्ष है, विपक्ष है, लेकिन सामंजस्य रहता है। यहां प्रतिद्वंद्विता नहीं है, बल्कि प्रतिस्पर्धा है। लोकतंत्र में मतभेद हो सकते हैं, लेकिन मन भेद की कोई गुंजाइश नहीं हो पाती है। यहां बहस होती है, मुबाहसे होते हैं, तकरारें होती हैं, तर्क होते हैं, लेकिन इस सदन में थोड़े ही समय में यहां, बाहर और सेंट्रल हॉल में सब कुछ सामान्य हो जाता है और हम एक सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में एक-दूसरे से वार्तालाप करते हैं। मान्यवर, विपक्ष में मेरी भूमिका अलग रही, सत्ता में अलग रही, लेकिन संसदीय कार्य मंत्री के रूप में कुछ अलग ही रही है और यह मैं विशेष रूप से उल्लेख कर रहा हूं। यही तो हमारी विशेषता है। यह कुर्सी, जिस पर सुषमा जी विराजमान हैं, इस पर एक समय प्रणब मुखर्जी बैठा करते थे। वे सुनिश्चित करते थे कि लैजिस्लेटिव और फाइनेंशियल बिजनेस पूरा हो। उन्होंने अपना रोल अदा किया और अब सुषमा जी अपना रोल अदा कर रही हैं। यह एक संसदीय कार्य मंत्री के रूप में मेरा अपना अनुभव रहा है। जब मैंने अन्य माननीय सदस्यों से गुजारिश की तो उन्होंने भी मुझे इसके लिए सहयोग दिया है। लोकतंत्र में पक्ष और विपक्ष एक-दूसरे के पूरक होते हैं और संसदीय परंपरा का यह तकाज़ा होता है कि हम सभी लोग, जहां-जहां और जिस-जिस पार्टी से संबद्ध है। अपने दायित्वों का निर्वहन तो करें ही, साथ ही संसदीय परंपरा के अनुरूप हमारा सदन में जो अपना फर्ज है, वह हम निभाते हैं और यह देखने को मिलता है। मैं आदरणीय प्रधान मंत्री जी का आभारी हूं, जिन्होंने मुझे सरकार में रहने और बहुत कुछ सीखने का मौका दिया है। दूसरी ओर यूपीए की अध्यक्ष आदरणीय श्रीमती सोनिया गांधी जी ने एक ओर जहां प्रधान मंत्री पद अस्वीकार करके स्वार्थरहित जन सेवा की अनूठी मिसाल दी, वह भी मुझे अपने सार्वजनिक जीवन में अपनी जिम्मेदारियां निभाने में हमेशा प्रेरणा देती रहेगी। यहां पर जो सभी सम्मानित सदस्य हैं, जो विभिन्न राजनीतिक दलों से सम्बद्ध नेता हैं, उनसे जो सहयोग मिला, मैं उसके लिए उनका ऋणी हूं और विभिन्न राजनीतिक दलों के माननीय नेताओं ने, खास तौर से हमारे विपक्ष के नेता आदरणीय जसवन्त सिंह जी और सभी नेता हैं, उन्होंने मेरे प्रति जो उद्गार व्यक्त किए हैं, मैं उन्हें सदैव अपने मन में रखूंगा। मैं राज्य सभा सचिवालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूं, जिन्होंने मुझे अपने कर्तव्य निर्वहन में अपेक्षित सहयोग दिया है। मान्यवर, मैं मानता हूं कि राज्य सभा सिर्फ भारतीय राज्यों का ही प्रतिनिधित्व नहीं करती है, बल्कि उसमें लघु भारत समाहित रहता है। जब मैं कह रहा हूं कि लघु भारत समाहित रहता है, तो देश की विभिन्न संस्कृतियां, हमारे देश में बोली जाने वाली विभिन्न भाषाएं, वेश-भूषाएं, यहां एकीकार होती दिखती हैं, ठीक वैसे ही, जैसे कि कई नदियां महासागर में मिला करती हैं। विविधता में एकता से गुंफित यह गुलदस्ता सदैव खिलता रहे, महकता रहे, पुष्पित और पल्लवित होता रहे, यही मेरी कामना है।

मैं माननीय सभापति महोदय का, इज़्ज़तमआब उपसभापति महोदय का, नेता प्रतिपक्ष का, सदन में विभिन्न राजनीतिक दलों के जो सभी सम्मानित नेता हैं, उनका और विशेष रूप से मेरे वरिष्ठ सहयोगी प्रियरंजन दास मुंशी जी का, उनके द्वारा प्रदत्त सहयोग के लिए आभार व्यक्त करता हूं। उन्होंने जो उद्गार व्यक्त किए, उसके लिए मैं हमेशा उनके प्रति हार्दिक रूप से कृतज्ञ हूं। मैं भौतिक रूप से तो यहां से जा रहा हूं, लेकिन मानसिक रूप से जो सदन की अविस्मरणीय यादें हैं, वे हमेशा मेरे मन में रहेंगी। मैं आप सभी के साथ बिताए सान्निध्य की सुखद यादों को हमेशा संजो कर रखूंगा। सदस्य रहते हुए मुझे कई भूमिकाएं निभाने का मौका मिला है। स्वाभाविक है कि मुझसे जाने-अनजाने में कई भूलें हो गई होंगी, गलती हो गई हों, तो मैं क्षमा चाहता हूं। मैं कुछ पंक्तियां कह कर अपनी बात समाप्त करना चाहूंगा—

इस सदन ने स्नेह देकर आत्मबल मेरा बढ़ाया

आपके आशीष से इतना समय सुख से बिताया

दायित्व मुझे जो भी मिलेगा, ध्यान मैं उसका रखूंगा

क्योंकि मैंने इसको विद्यापीठ कहा है, जो इस सदन से सीखा है।

दायित्व मुझे जो भी मिलेगा, ध्यान मैं उसका रखूंगा

मैं निभाऊंगा उसे, सम्मान मैं उसका रखूंगा

अपने किसी भी काम में मैं सिर सदन का झुकने न दूंगा।

धन्यवाद।

* The speech was originally delivered in Tamil.

SHRI C. PERUMAL (Tamil Nadu): *Hon'ble Chairman, We have come to a moment of thanksgiving. Every meeting comes to an end with the proposal of vote of thanks. I presume similar thing is taking place at this sweeter moment. When it comes to politics and public life there is very little meaning for the work 'rest'. There can be a respite to a term in Parliament or Legislative Assembly. But in public life there is no rest or respite. This is my avowed view.

I would like to putforth certain view points here. As a global citizen. I would like to identify myself as an Indian. As an Indian citizen, I would like to identify myself as a Tamilian. At this moment, I would like to recall some people to whom I owe much in life. Maatha, Pitha, Guru, Deivan are the four. Mother, Father, Teacher and God are the four that form a core in our lives.

In Tamil literature, in the early Sangam literature a poetess by name Ponmudiar has written a poem worth quoting here on this occasion.

'Eendru purantharuthal en thalai kadaney.

Sandron aakkuthal thanthaikku kadaney.

Vel vadithu koduththal kollarkku kadaney'

[Giving birth to and bringing us up is the duty of a mother, Shaping him up to be a scholar is the duty of a father, Providing him with spear to establish him is the duty of a smith.]

A mother gives shape to a man by giving birth to him. A father gives shape to a man shaping him up to be a scholar. But he is shaped to be a human being by the society he lives in. He becomes good or bad or a useful man by the forces wielded by the society.

My mother gave me life as a man and gave me a good childhood and upbringing. My father also enabled me to grow as a well educated man. It is this society that has shaped me up to be what I am now. I would like to refer as 'Society' our leader and our General-Secretary of our All India Anna Dravida Munnetra Kazhagam, Dr. Puratchi Thalaivi Amma. Lakhs and lakhs of our cadre that forge to form a society. Naturally very few people can get selected at the hands of our Amma to get elected as Members of this august House. I have got such a rare opportunity as part of that society that has shaped me up to be so. I have been born elsewhere and each one of our from different places. Now I find myself here getting an opportunity to become an MP, thanks to Amma. It is also a rare opportunity to be a member of this House of the elders, the Rajya Sabha. The 'Vol', the tool that stands for valour and knowledge was provided to me by the society led by our 'Amma' and I would to record here that I am deeply indebted to her. I am happy to recall it here. I would like to quote another 'new verse' on this occasion.

'I am like an ordinary dot.

I have been made a big shot with no blot

by the eminent among we lot,

puratchi thalaivi 'Amma' the great.

Just by a stroke of her pen

she had ensured my

standing in this August House.

I consider this House a college or an University where people throng to gather knowledge. I have had my commissions and omissions as a student. As the head of a college or an educational institution, the Chair was kind of us even when we had gone beyond the brief and resorted to even certain mischief. You have only been affectionately chiding us like the Headmaster of a school. I would like to thank you for treating us kindly like your wards.

It is green in my memory what all I have come across in this August House and the knowledge and experience I have gathered through the interactions I have had with my fellow Members of Parliament.

I can not forget for ever the rich experience I have gained.

I have worked with three Chairmen in this House. Late Shri Krishan Kant, Shri Bhairon Singh Shekhawat were there. Now we have you (Shri Mohammed Ansari) here sir. I would like to recall my working with the then Deputy Chairman Smt. Najma Heptullah. Now, we have Hon'ble Rehman Khan. All of you have treated us with great affection. I would like to bestow my thanks again and again.

At this juncture I would like to placeforth an appeal that is apolitical. It is a great opportunity to become a ruling party. Whoever or whichever party comes to power, they must discharge their functions with a vision and a long term perspective without any considerations having the next elections in the mind. We must think of the next generation and the future ahead.

A college student an Islam by faith had written in Tamil Nadu, 'we are yet to see the Dawn, as we won freedom at night'. It only shows how pained he was to have said so after seeing all the dark in the system. Its sound echoed in this august House too. Let's have a real dawn. Let our lives brighten with all its brightness in our country India.

Providing a better life to all the citizens of this country from all walks of life must be the vision of all those who are here in this House cutting across party lines. This is our duty. Reiterating again my grateful acknowledgements to our leader and thanking the Chair and fellow members again, let me conclude. I would also like to thank all the officials and security staff. Pointing out again that this is only an intermission let me, Perumal, this Perumal, your fellow member Perumal, take leave of you for now. Thank you.

SHRI DWIJENDRA NATH SHARMAH (Assam): Mr. Chairman, Sir, and hon. Members, six years back I came to this House with the blessings of my Leader Shrimati Sonia Gandhi, who brought me to this House and my first speech in this House was on the North-Eastern Council (Amendment) Bill. I remember very well, when I joined this House, that Bill came and I started speaking in the Rajya Sabha with that Bill.

Sir, during the last six years, I believe, I tried my best to highlight the problems, particularly, of my State — Assam and the North-Eastern Region. It is because of the fact that my State is passing through a very crucial stage since long. During this period, whenever there is a problem, we used to go to our hon. Prime Minister, whom we treat with respect, not only because he represents the country, but he has been representing my State — Assam — all the time. We take his advice whenever there is a problem. He was prompt enough to solve those problems which my State and my people are facing. I have already mentioned that Assam is passing through a crucial period for a long-time. There are many other problems in the North-Eastern Region. I remember, whenever there is a problem, I used to go to the hon. Home Minister. He was prompt in giving me time and trying to solve the problems pertaining

to my State. I remember my relationship with Shri Priyaranjan Dasmunsi with whom I can speak in Bangla even though I am an Assamee, and I can express my views freely. I remember, when I was elected to this august House, Shri Pachouri, Shri Anand Sharma, who was once the Youth Congress President, helped me a lot. I have also a very good relationship with Shri Janardhana Dwivedi, who is also the Chairman of the Standing Committee on HRD of which I am a Member and Shri Murli Deora, who is the Chairman of the Consultative Committee on Petroleum. It is a very, very remarkable time in my life that I could meet all those prominent leaders — from opposition, from my party, from different States and from different places — of this country. I don't think that, today, I am retiring. But, I have so much of work to do in future. I will continue to serve this country. I will also lead my public life in future. I will continue to serve this country. Also, I am confident that I will be able to serve my people in the State of Assam and the country as a whole. The only thing that I urge upon the hon. Prime Minister and our leaders is that they will continue to give their blessings to me. I express my gratitude and respect to the hon. Deputy Chairman, whom I used to consult on many problems pertaining to minorities of my State. I express my respect to all the opposition leaders and hon. Members from different parties. I promise, in future, I believe, I will be more active in the service of the people of this country. Thank you.

श्री गांधी आज़ाद (उत्तर प्रदेश): सभापति महोदय, विदा होने वालों की सूची में वैसे तो मेरा भी नाम है, लेकिन मैं अभी जुदा नहीं हो रहा हूं।

महोदय, अभी हाल में जो साथी विदा हो रहे हैं, मैं अपनी तरफ से और अपनी पार्टी बहुजन समाज पार्टी की ओर से उन समस्त साथियों की आभार प्रकट कर रहा हूं। महोदय, वे समस्त साथी, जिन्होंने इस उच्च सदन के माध्यम से देश की समस्याओं को यहां रखने का काम किया और उनके निराकरण करने का, उपाय निकालने का भी काम किया, ये सारे साथी आज विदा हो रहे हैं। उनसे मैं निवेदन करूंगा कि अब आप जनता के सदन में जाकर अपनी प्रखर बुद्धि से उनका मनोबल बढ़ाकर उनको हक-अधिकार दिलाने का काम करें।

आज हमारे बीच से प्रो॰ राम देव भंडारी जी रिटायर हो रहे हैं। मेरी राय में तो वे मानवता के भंडार ही हैं। श्री सुरेश पचौरी जी का भाईचारे का व्यवहार काफी सराहनीय रहा है।

मैं इन सभी साथियों के विषय में इतना ही कहूंगा कि ये भले ही रिटायर हो रहे हैं, लेकिन मेरी शुभ-कामना है कि वे कभी "टायर्ड" नहीं होंगे। अंत में दो पंक्तियों के साथ अपनी बात समाप्त कर रहा हूं:-

"गज़ब तेरी महफिल में देखा तमाशा, कहीं चांदनी है तो कहीं है अंधेरा,किस्मत के बदले ये दीपक बने हैं, कोई जल रहा है तो कोई बुझ रहा है।"

धन्यवाद।

DR. P.C. ALEXANDER (Maharashtra): Sir, at the outset, I wish to convey my gratitude to you, personally, for the courtesy and kindness you have always extended to me in this House. I also wish to avail of this opportunity to convey my gratitude to your predecessor, in office, Shri Bhairon Singh Shekhawat for the kindness that he had extended to me. I remember with great appreciation and gratitude the cooperation and support I had received from Shri K. Rahman Khan, the Deputy Chairman; Shri Agnihotri, the Secretary-General; his predecessor, Shri Yogendra Narayan; and, the very able and extraordinarily dedicated staff of the Rajya Sabha Secretariat. I wish to say this very particularly because, as one with a long experience in administration, I should say that I have found, in this Secretariat, one of the most competent staff that I could ever think of.

Sir, I came to this House by a sheer accident of fate. Many of you, who know me and my career, will know the circumstances in which, in 2002, I happened to be elected to this august House. I had actually decided to resign as the Governor of Maharashtra after completing nine years, and one more year was waiting for me for the circumstances in which I had found myself at that time. My old friend, Shri Sharad Pawar, who is not present here, came to me at the *Raj Bhawan* and said to me, "I am going to make an offer to you. Take two days to think about it. Don't say 'no' today. Even if you are going to say 'no', do it after two days. This seat in the Rajya Sabha belongs to my party. I will never ask you to be a member of my party, or, to support me anywhere on a party basis. You can choose to be an independent. Nobody is going to oppose you because this seat is mine. And, please give me reply in two days' time". I thought, on his words, that I would be elected unopposed. And, after two days, I said, "If I am unopposed, I will certainly come." But fate decided otherwise, I had to face an election. I said to him, "I will not telephone even a single person, among the Members in the Legislature, to support me." He just said, "You don't have to do anything". And, I am glad to say that I got elected with three-fourth majority from that legislature. I mention this to show that he thought that I would be making a great contribution in this House. In fact, he told me that if I come to Parliament, I could, with my background and experience, make a great contribution to the nation's development programmes. But within about 5-6 months of my being a Member of this House, I found, from my experience, that a person who is a non-party, independent, in the set up of our parliamentary democracy, will not be able to get an opportunity of being of real service to the nation from this floor of the House. I do not blame the system. Ours is a Parliamentary democracy, which means it has to be based on Party governance. Therefore, Party system is, absolutely, justified. A few of us who are outside the party system may complain that they do not get the full opportunities to express their views, but in a Parliamentary system of democracy, they have to accept it with grace. Then, I decided that I would try to make my contribution in the Consultative Committee of Parliament of the Home Ministry and in the Standing Committee where Civil Services, Law, Justice and other such subjects were being discussed. I should say that I have attended, practically, every meeting of the Standing Committee and, of the Consultative Committee whenever they were held in Delhi. I should say with pardonable pride that I have done my best to bring to the discussions my knowledge and experience of my background. My only advice to those who are independent Members of the House is this. If they find disappointed with lack of opportunities within the House, don't blame the system. The system has to be like that. But they can follow the example that I have chosen. You do your best in the Standing Committee and in the Consultative Committee, and you will get real job satisfaction there. It is with that job satisfaction that I am leaving this august House today, which is the last day of my attendance here. Sir, I have a feeling that we are not making the best use of the talents available in this House. I have watched the proceedings of this House sitting in the Officers' Gallery from the days of my Deputy Secretaryship. I cannot recall a time when the House had within itself so much of talent and so much of experience. Look at the Opposition Benches — Shri Jaswant Singh, Shri Yashwant Sinha, the great lady who represents the power, honour and grace of the Rajya Sabha, Shrimati Sushma Swaraj, Shri Arun Shourie and Shri Arun Jaitley. These are all some of the most brilliant persons who have ever sat on the benches of Rajya Sabha. On the other side in the Treasury Benches, we have very eminent speakers, very talented debaters, but most of them have become Ministers; therefore, they don't contribute to the general debates in the House; they talk only on their own subjects. But in the back benches, we have a gallary of talents, the type of which you may not get very often Prof. M.S. Swaminathan, Dr. K. Kasturirangan, Dr. Bimal Jalan, Shri Arjun Kumar

Sengupta and Dr. (Smt.) Kapila Vatsyayan. These are people with plenty of experience in their respective fields and you should really draw them out and make the maximum use of their talents for the discussions and debates. That is the main point that I wish to emphasise today. How do we do that? We should always remember as Members of this House that this is essentially, or, this has to be essentially a deliberative body. We have very little to do with the Budget, though, we use the Budget occassion to make our speeches. We cannot touch the Money Bills. We cannot influence the Executives' responsibility and accountability because they are responsible to the Lok Sabha. That is the structure.

But there is one area where we can make the maximum contribution and that is the role of Rajya Sabha as a deliberative body. There are so many things to deliberate in this House, but we are not able to find the time for that. Every time certain important Parliament Questions are raised, the Chairman in his kindness will say, "If you all insist, I will set apart Half-an-Hour, or , a longer time for discussion". I can tell you from the experience of the past six years that these promises are seldom kept, because we never had real in-depth discussion in the House on matters which really belong to us, or, should belong to us. It is only by having such discussions, such debates and such deliberations that the Rajya Sabha can justify itself. It is only through that that we can draw upon the talents of all people without reference to parties. In those discussions, there should not be party-basis discussions. People should speak out boldly. The treasury Benches are not expected always to support the Government. If you follow the British Parliament example, you will see how the Labour Members speak openly against the Government policies. When it comes to vote, which will affect the survival of the Government, they go by whip. Therefore, such conventions should we developed in this House. This is the first most important point that I would like to place on this occasion.

Sir, in my memory of six years, the only debate that has happened in this House, which I can really call 'real deliberation', was the one on the 'Indo-US Nuclear Cooperation Agreement.' I give full credit to all those who participated in it from both sides of the House and from independent Benches. I would like to have that type of debate in this House on some of the subjects that I wish to describe as most important for the nation. For example, take education policy. Many of us have got a lot of experience in running educational insitutions having been Chancellors or Vice-Chancellors. Many of the Member in this House are great scholars. But education policy has never been properly discussed in this House. Similarly, take judicial reforms. Eminent lawyers are here and eminent jurists are here, but judicial reforms have never been discussed at length. Then, there are other important subjects like Problems of the Farmers', 'India's Neighbourhood Policy', 'Adequacy of the Programmes for Poverty alleviation'. I, particularly, mention the last one. The hon. Home Minister recited in his speech nearly a dozen schemes which are intended to alleviate poverty. For the last fifty years, we have been alleviating poverty, but poverty is still with us in a most disgraceful, shameful way. Something is wrong with the technique and the strategies we follow in alleviation of poverty. Sir, we should not have on day's discussion but two or three days' continuous discussion and debate in this House of scholars as to whether we should revise some of the strategies and think of new strategies. And, again I would say that there are other important subjects like 'Policy on Public Health', 'Population Control', 'Reservation Policies', 'The Policy for Minorities', etc. I have just mentioned about a dozen subjects which sould engage our attention and which should be taken up for in-depth discussion in this House.

Sir, before I conclude, I should place before the House my deep concern about three subjects. I heard everything that my good friend, Shivraj Patil, had to say about what he does

or what his Ministry does for controlling terrorist activities. Without getting into a deabte with him on this issue, I will mention three things that worry me utmost on this occasion as an elderly person with some experience and background in Administration. First of them is the threats that we face to national integration. You may say, 'this is old hat'. Or, 'we have heard it from Mahatma Gandhi's days'. But today that problem is staring us in our face. What has happened in Manipur should give us sleepless nights. What happened in Bomay shocked many of us. When that is repeated in Manipur, it should be taken up as a matter of utmost concern to us. Sir, national integration is not just an abstract subject. It is something with which we live every day of our life, every hour of our life. If we find scenes like the one that we saw in Manipur, repeated in other State, how can we say, from this House, that we are aware of the seriousness of that problem. We have to take up this problem of national integration with the utmost seriousness.

And, the second, of course, is Naxalite violence. I don't wish to enter into a controversy with the hon. Minister. Let us have a full-fledged discusson again and again and find out how to tackle this problem. Let us go into all the assurances the hon. Minister gave and find out what is wrong in spite of so much money having been spend. We are not able to control this menace. And, along with naxalite violence, I would also add the problem of breakdown of law and order in certain parts of our country. I am told that in some States, even officers of the Police department in charge of law and order are giving protection money to make sure that their children are not kidnapped. This is what has been conveyed to me by people who directly know about this. If officers of the Government, in some cases, even the senior-most Police officer or a Chief Secretary or Home Secretary of a State, cannot be sure that their children will not be kidnapped, what type of a government are we running in these States? How can we have good sleep at night when part of our country is being threatened by goons and can get away with it? There is no ideology which feeds them, their insurrection. It is only extortion, lust for money. Why don't we handle that problem effectively and discuss them here?

The third issue is, of course, our growing tolerance to corruption. Shri Manohar Joshi mentioned about my repeated warnings, speeches and writing about corruption. When I find members of my own previous service, the IAS, occupying high positions at the State level and even at the Central level, having fallen prey to the greed for money and having indulged in acts of corruption, I hang my head in shame, becuase if the chain that controls the elephant gets rusted and weak, what is the use of putting the chain over the elephant? We have to tackle this problem with strictness. But we try to protect the corrupt by insisting on permission or prior permission of the Joint Secretary to prosecute or even investigate the corrupt, and a hundred reasons can be given. In some cases, we need to be very strict. In certain cases we cannot be just permissive in our attitude or tolerant in our attitude.

I flag these three problems and I would earnestly request that at some stage or the other, this should engage the attention of those who are responsible for deciding the business of the House and see to it that these problems receive earnest attention.

Sir, I leave the House with a sense of satisfaction that I have added a new dimension to my experience. And I would never have thought that I would be a person who would add the letters 'MP' to my name. In fact, to be very honest and in an autobiographical mood this post of a Member of Parliament was offered to me by the great Prime Minister of this country,

who believed in me and trusted me as his lieutenant, Shri Rajiv Gandhi, in 1989. And he said, 'You may choose any constitutency in Kerala and I would give it to you, but I want you to contest the elections and come to the Parliament'. But I said, 'I am not cut out for the role of an MP. I will never be able to nurse my constituency. I would never be able to make recommendations on behalf of my vote base'. He listened to me and asked me to continue as Governor; at that time, the State was under President's Rule. So, I never wanted to be in this House. I happened to come here and I go back with full satisfaction that I could add a new dimension to my experience at my old age. This would remain a source of great satisfaction for me.

Thank you, Sir.

MR. CHAIRMAN: Shri Ekanath Thakur. The hour is getting a bit late. I would like to request hon. Members for bit shorter interventions please.

SHRI EKANATH K. THAKUR (Maharashtra): Sir, at the outset, let me convey my deepest sense of gratitude to your honour and also to our esteemed Deputy Chairman, Shri Rehman Khan. It would be ungrateful on my part if I do not recapitulate with gratitude the opportunities that were given to me when I first came to this House by late Shri Krishnakant and also the respected Shri Bhairon Singh Shekhawatji.

Sir, perhaps, I am the only one of those who had a very difficult life than others. I lost both my parents at the age of two. I worked as a shop boy from seven years of age to sixteen years. I was a child labour. For nine years, I worked as a shop boy. Later on, becuase of malnutrition, I got cancer at the age of twenty-eight with which I have been living for the last 37 years. So, I have fought with orphanhood; I have fought with poverty and I have fought with cancer. But I am here to join all my friends and colleagues in the fight against poverty, which seems to be, at the moment, a difficult battle. Sir, I am beholden to all the Members of the House. I happened to be from Shiv Sena and my greatest gratitude is to Shri Balasaheb Thackerey. He know that I have come through a difficult life. But I was the leader of six and half lakh officers of banking, insurance, aviation, steel, coal mines and fertilizers in this country. I was sent to ILO by Morarji Desai's Government. I was also a central Director of State Bank of India and Director of many other banking institutions. I was also running the largest recruitment training institute of India, my own National School of Banking, under which I trained more than 300,000 people. So, as an educator, as a trade unionist, as a banker, hon. Balasaheb Thackerey, Shiv Sena *pramukh,* sent me here. Without this greatness of his, I would not have seen before you. So, I expressed my gratitude to Shri Balasaheb Thackerey and to my party. When I came here, I asked Balasaheb, what do you think I should be doing in the Rajya Sabha. He said, "You have come through difficult life. Therefore, raise your voice for the farmers of India, for the workers of India, for the downtrodden of India, raise your voice for Maharashtra and raise your voice against all anti-national elements." This was his mandate — to stand for farmers, to stand for workers, to stand for downtrodden, to stand for Maharashtra and to stand against all anti-*Hindustani* elements. I believe, I have remained true to that mandate and to this task he assigned. Sir, this House gave me the opportunity, and I am thankful to this House, to work on the Defence Committee, on the Finance Committee, on the Industry Committee, on the IT Committee and on the Food

6. 00 PM

Processing Committee. In six years, I have worked with five Committees and all the Chairmen of all the Committees have given me great opportunity and encouragement. I am beholden to them all. My group, the National Democratic Alliance, is the one which showered me with all love and affection, and for two years when I was the leader of the Shiv Sena Party here, I had the opportunity to be the Member of the Central Committee of the NDA and I have attended several meetings of the Central Committee at the residence of respected Shri Vajpayeeji, and the Committee included repected Shri Advaniji, Shri Jaswant Singhji, Shrimati Sushmaji and other leaders including Shri George Fernandesji, and Shri Sharad Yadavji, I had the privilege of listening to them and working with them at the highest level. Though I was a newcomer, Sushmaji and other senior colleagues, like Advaniji and Vajpayeeji, treated me with great amount of love.

I am beholden to them. I can never forget the love and affection which I have received from the entire NDA group. Sir, I learnt a lot. I consider being here as a learning opportunity, and I learnt a lot not only from my NDA colleagues but also from our very, very respected Prime Minister, Dr. Manmohan Singh, whom I knew since he was the Governor of Reserve Bank of India and I had met him with my colleagues because I was leading all officers of the banking industry and also of the Reserve Bank. With Mr. Patkar, with Mr. Augsteen, with Mr. Aiyer, I used to meet respected Dr. Manmohan Singhji in the Reserve Bank. From those days to now, I have a deep sense of regard and respect for him personally. I also learnt a lot from the Treasury Benches; from Shri Shivraj Patil, hon. Home Minister; from Shri P. Chidambaram, hon. Finance Minister; from Shri Sharad Pawarji, hon. Agriculture Minister; Shri Dasmunsiji, and other colleagues who are present there.

Sir, as I leave this House. I would repeat what I said a few moments ago while speaking on naxalism. I am only concluding in half-a-minute. Sir, I believe in the adage that for evil to succeed, it is enough if good men do nothing. And, there are lots and lots of good men here and in the country who are doing nothing to stop the evil that is being perpetrated on our society. Sir, in my final words, I would say that if we have to remove naxalism, if we have to remove terrorism, if we have to dream of an India that gives opportunities which are promised there in the Constitution of India to every citizen, then our Government must come down heavily on crime; it must come down heavily on corruption; it must come down heavily on the threats that are taking place; it must come down heavily on the leakages — there are 30 per cent leakages in the Public Distribution System — it must come down heavily on other forms of ostentation and ugly exhibition of filthy wealth. Sir, finally, I would say that we have to reform our criminal justice system. Out of 100 persons who are prosecuted, only four persons are finally sent to jail. And, before they go there, they die. So, finally, nobody is accountable for any criminal act in this country.Therefore, our criminal justice system has failed us. I think it is time that we must reform the system early so that people of India get justice and if actions are taken on the areas highlighted now, then, I believe people of India will have better days and the poverty of India can be eliminated very soon.

I thank all my friends, all my colleagues, all my seniors for the love which they have given me. I am beholden to you.

SHRI S.P.M. SYED KHAN (Tamil Nadu): Hon. Chairman, Sir, the first and foremost impulse of heart and soul hasten to think of my political leader, Puratchi Thalaivi Madam Jayalalitha, for having nominated me as one of the Members of this House and got me

elected through her MLAs. I do not know how to thank her in abundance. The only thing that I can do is to continue to be loyal and devoted to her and the Party till my end. Coming to hon. Chairman and hon. Duputy Chairman, my sense of gratitude often reminds me how great they are and how they have been very considerate all along to me when I wanted to speak on any subject and elicit information during Question Hour in this House. My special thanks are always to you, Sir. I also thank my colleagues. Thank you.

SHRI R. SHUNMUGASUNDARAM (Tamil Nadu): Sir, it is a great privilege to be here. I enjoyed every day in Rajya Sabha. It was a very great learning experience. It was like going to university. I came with little experience of public speaking. I myself being a lawyer, I was only arguing cases in court halls. Here, I learnt the skills of public speaking. I observed so many things. I learnt so much in the Standing Committees and Consultative Committees.

Sir, the reading materials were very useful. I think , these materials and the experience that I have gained have sharpened my skill. Sir, I am going back to my party work and I am very happy that I am going back to my Leader. I will work for the Party, I will give advice to my Party on the legal front as I am always considered the Chief Counsellor of my Party. I was the Advocate General even during those days when the Party was not in power.

Sir, I recall the day when I took oath here. Shri Murasoli Maran, my mentor, my Godfather, the person who groomed me was here to greet me, congratulate me. I miss him a lot.

Sir, I have great satisfaction today. I thank everyone. I think, I made some contribution by participating in more than fifty debates. Again, I thank everyone. Thank you.

श्री जयन्ती लाल बरोट (गुजरात): माननीय सभापति महोदय, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे यहां बोलने का मौका दिया। वैसे मैंने जनसंघ से कार्य शुरू किया था। मुझे हमारे प्रांत के मुख्य मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने यहां दिल्ली आने का मौका दिया। मैं कह सकता हूं कि मैंने नीचे से काम शुरू किया था और वहां से संसद तक पहुंचा हूं। हर आदमी जिसकी नियुक्ति होती है उसे जाना जरूर होता है और आते समय आनन्द भी होता है और जाते समय दुख भी होता है, लेकिन मैं एक ऐसा आदमी हूं कि यहां मुझे कुछ सीखकर जाने का मौका मिला है। यहां राष्ट्र की बड़ी प्रतिभाएं बैठी होती हैं और उनके बीच मुझे यहां बैठने का और चर्चा करने का मौका मिला है। इसलिए मैं सब का आभारी हूं। मैं हाउस का भी आभारी हूं। मैं आर॰एस॰एस॰ से संस्कार पाकर यहां आया हूं, मैं राष्ट्र का सैनिक हूं, पार्टी का सैनिक हूं। मैंने हमेशा राष्ट्रीय एकता, सामाजिक समानता और सामाजिक समरसता के लिए काम किए हैं। समाज के व सभी धर्मों के लोग हमारे भाई हैं, इस व्यवहार का मैंने उनके साथ रवैय्या रखा है। मैं यह कह सकता हूं कि लोकतंत्र में वैचारिक मतभेद तो होते हैं लेकिन मन भेद नहीं होने चाहिए। यहां आने के बाद मैंने देखा कि कुछ लोग अपना दोहरा मापदंड रखते हैं, दोहरा रवैय्या रखते हैं, हाउस के अंदर अलग चीज होती है, बाहर अलग चीज बोलते हैं। अब ट्रेजरी बैंच के लोग पहले यहां विपक्ष में बैठा करते थे और उस टाइम मैं सामने बैठता था। परन्तु आज मुझे लगता है कि वहां जो लोग पहले विपक्ष में बैठकर बोलते थे, वे ही वहीं जाकर आज ट्रेजरी बैंच में बैठे हैं और अब हमको बोलने का मौका नहीं देना चाहते। यह लोकतंत्र है, इसलिए मैं चाहता हूं कि विपक्ष को बोलने का मौका देना चाहिए कि जो बोलना चाहे बोले और सरकार जो करना चाहती है वह करे, लेकिन कम से कम विपक्ष का बोलने का मौका तो नहीं लेना चाहिए। दूसरी बात, मैं ऐसा मानता हूं कि मैं एक पार्टी का कार्यकर्त्ता हूं। मैं प्रवासी कार्यकर्ता होने के नाते साल में ऐवरेज तीन सौ किलोमीटर से ज्यादा यात्रा करने वाला हूं। 1969 से काम करते-करते यहां 2002 से 2008 तक के छः साल के कार्यकाल में मुझे लगा कि यहां मुझे बैठने की सजा हो गई है, क्योंकि यहां आकर पूरे दिन बैठे रहना मुझे पसंद नहीं था , लेकिन यहां बैठने के बाद मुझे लोगों के विचार, लोगों के काम करने के तरीके सीखने को मिले। मुझे सीखने का मौका मेरे राष्ट्रीय नेताओं-माननीय अटल जी, आडवाणी जी, वेंकैया जी, राजनाथ सिंह, सुषमा जी और अहलुवालिया जी से मुझे मार्गदर्शन मिला है और उस मार्गदर्शन के आधार पर मैंने आप सबके बीच में अपने इस छः साल के कार्यकाल को पूरा किया है। मेरी आपसे एक विनती है कि इस हाउस में अलग-अलग भाषा के इंटरप्रेटर थे लेकिन पिछले कई साल से कई भाषाओं के इंटरप्रेटर्स नहीं

हैं, उनकी नियुक्ति नहीं हो पायी है। हमने इसके लिए दो-तीन बार हाउस में मांग भी उठाई है, लेकिन आज तक नियुक्ति नहीं हुई है। हमारे गुजराती भाषा के इंटरप्रेटर की जल्दी से जल्दी यहां पर नियुक्ति हो जाये, जिससे हमारे आने वाले जो कार्यकर्ता होंगे, उन्हें किसी बात की दिक्कत न हो। मैं एक बात गर्व से कह सकता हूं कि मैं भारतीय जनसंघ का कार्यकर्ता था, भारतीय जनता पार्टी का कार्यकर्ता हूं। इस देश को गर्व है कि हमारे देश के प्रधान मंत्री डा॰ मनमोहन सिंह जी हैं। उनकी प्रतिभा, उसका कार्य बहुत ठीक और अच्छा है। उनसे मैं खुश हूं और आनंद तथा गौरव का अनुभव करता हूं। अंत में, मैं एक ही बात कहूंगा कि हम तो जाते अपने गांव, सबको राम-राम-राम। कुछ गलती हो गयी हो, तो क्षमा कीजिएगा। धन्यवाद।

THE PRIME MINISTER (DR. MANMOHAN SINGH): Mr. Chairman, Sir, we live in a world where the only constant thing is change itself. So, the ability to cope with the processes of change is the hallmark of any dynamic institution. Mr. Chairman, Sir, our country is indeed fortunate to have such a vast reservoir of wisdom, knowledge and experience represented in the Rajya Sabha. Sometimes we have not been able to take full advantage of that. Therefore, on an occasion like this, we should also reflect a little bit as to what we can learn, whether all the talent or energy, represented in this House , is being utilised fully to promote an awareness and understanding, and to contribute to the solution of our nation's problems. I think that is something we should reflect upon. What Dr. Alexander has mentioned or what Shri Ekanath K. Thakur has mentioned are the issues which cannot be put under the carpet.

Having said that, all the retiring Members have made a very distinct contribution to the functioning of this House and, on behalf of our Government and UPA, I wish to convey to all of them my and our good wishes. Each one of them has been in many ways a role model.

I came to this House nearly at the same time as Prof. Ram Deo Bhandary came. Over these 16 years, I have had the privilege of working with him, and I had been truly impressed by his humility, by his vast knowledge, and by his deep and abiding commitment to the ideals of Shri Karpuri Thankur, Dr. Ram Manohar Lohia and other great leaders of our country.

Sir, Dr. P.C. Alexander is an old, very dear friend and colleague of mine whom I have known and worked with in various capacities for the last 40 years. Whenever he has spoken,he has spoken with feelings backed by deep knowledge and vast experience that he has gained in the administration of this country. And what he has told us today is also true to his way of working. Even on his last day in Parliament, he has laid bare issues which, as a House, we cannot afford to put under the carpet or forget.

Sir, I have worked, very closely, with Shri Ekanath K. Thakur. His is truly a profile in courage. We have learnt about his illness. That he has not allowed that illness to come in the way of working with zeal, with energy, I think, is truly an example which we all ought to emulate.

Sir, there are senior Members of our side —Shri Rajasekharan, Shri Suresh Pachouri, Shrimati Prema Cariappa and Shri Janardhana Poojary. They have been Members who have made a great contribution to our deliberations. About Suresh Pachouri, the less I say the better. He and I have been colleagues in various capacities, both in the Opposition and, now, in Government. He has made an outstanding contribution to the functioning of this House, and I am sure that the new responsibilities that are being entrusted to him will, I think, once again, bring into display his vast skills and qualities in terms of organisational skills.

Mr. Chairman, Sir, Shri Ravula Chandra Sekar Reddy made a moving reference to using this opportunity to bring forward the Women's Reservation Bill. I have given a solemn commitment to this House when I spoke on the President's Address, that it will be our endeavour to evolve a broad-based consensus to bring forward for the consideration of Parliament a Bill relating to reservation for our women. In the same way, he has made a feeling reference to the problems faced by our farmers, and I can assure him that this is a subject which is very dear to my own heart, to the heart of our Party and to the heart of our Government; we have taken determined measures and if more such measures are needed, our Government will not be found wanting in taking decisions.

Sir, I do not find, today, a very senior leader, Shri Keshubhai S. Patel. He has been almost a silent Member, but I know that he represents great wisdom, knowledge and experience in the affairs of our nation, and although his services will not be available to this House, his going back to his home-State of Gujarat, I hope, will mean better times for that State of the Union.

In the same way, we will all miss Shri Shatrughan Sinha. He had been a Member who has enriched our debates, who has spoken with feeling, and has also been a voice of reason and moderation.

I could, Mr. Chairman, go on, but time is short. And in conclusion, I, once again, join you, joint my other colleagues, in wishing all the retiring Members of this House God speed. I convey to them my good wishes. Some of them will be coming back. Those who do not come back, I hope, will have other opportunities to serve our nation, and they have my good wishes and good wishes of the Government. I thank you, Sir.

MEMBER SWORN

Shri Ejaz Ali (Bihar)

MR. CHAIRMAN: The House stands adjourned to meet at 11.00 a.m. on 15th April, 2008.

The House then adjourned at twenty-one minutes past six of the clock till eleven of the clock on Tuesday, the 15th April, 2008.

GMGIPMRND—3142RS—06-04-2009.